

गृहस्वामिनी



भारत ज्ञान विज्ञान समिति

नव जनवाचन आंदोलन

इस किताब का प्रकाशन भारत ज्ञान विज्ञान समिति ने
'सर दोराबजी टाटा ट्रस्ट' के सहयोग से किया है।
इस आंदोलन का मकसद आम जनता में
पठन-पाठन संस्कृति विकसित करना है।

गृहस्वामिनी	<i>Grihaswamini</i>
पुस्तकमाला संपादक तापोश चक्रवर्ती	<i>Series Editor</i> Taposh Chakravorty
कॉपी संपादक राधेश्याम मंगोलपुरी	<i>Copy Editor</i> Radheshyam Mangolpuri
रेखांकन सुनयना बी. पाण्डे	<i>Illustration</i> Sunayana B. Pande
ग्राफिक्स जगमोहन	<i>Graphics</i> Jagmohan
प्रथम संस्करण जुलाई, 2007	<i>First Edition</i> July, 2007
सहयोग राशि 35 रुपये	<i>Contributory Price</i> Rs. 35
मुद्रण सन शाइन ऑफसेट नई दिल्ली - 110 018	<i>Printing</i> Sun Shine Offset New Delhi - 110 018
सौजन्य पीपल्स पब्लिशिंग हाऊस	<i>Courtesy</i> Peoples Publishing House

Publication and Distribution

Bharat Gyan Vigyan Samiti

Basement of Y.W.A. Hostel No. II, G-Block, Saket, New Delhi - 110017

Phone : 011 - 26569943, Fax : 91 - 011 - 26569773

Email : bgvs_delhi@yahoo.co.in, bgvsdelhi@gmail.com

website: www.bgvs.org

BGVS JULY 2007 2K 3500 NJVA 0022/2007

हम लेखकों के विचारों की स्वतंत्रता में विश्वास करते हैं, सहमति/असहमति अलग बात है।

गृहस्वामिनी



वांग रुनचि : एक परिचय

वांग रुनचि का जन्म 1946 में शानतुंग प्रान्त की वनतंग काउन्टी के एक गांव में हुआ था। वनतंग टीचर्स ट्रेनिंग स्कूल से 1967 में स्नातक होने के बाद आपने पहले अध्यापक तथा बाद में पत्रकार के रूप में काम किया। 1970 में येनथाए प्रिफेक्चर के सांस्कृतिक ब्यूरो के लेखन विभाग में काम करने के पश्चात अब आप येनथाए प्रिफेक्चर प्रशासन के नाट्य लेखन विभाग में व्यावसायिक लेखक बन गए हैं। आपको 1982 में चीनी लेखक संघ की सदस्यता प्रदान की गई।

वांग रुनचि का लेखन सातवें दशक के अन्त से आरंभ हुआ जब शौकिया लेखक के रूप में उनकी अनेक कविताएं, रिपोर्टाज तथा कहानियां प्रकाशित हुईं। 1979 से आपने प्रायः एक दर्जन कहानियां लिखी हैं जिनमें **प्रारम्भिक वसन्त**, **भाई ल्यांग और बहिन फांग** आदि शामिल हैं। अखिल राष्ट्रीय कहानी प्रतियोगिता में आपकी 1980 में प्रकाशित **केंकड़े की बिक्री** को पुरस्कृत किया गया था।

गृहस्वामिनी

वांग रूनचि

1

साठ वर्षीय स्वोछंग आजीवन एक भीरु तथा अतिसंवेदनशील प्राणी बना रहा था। उसकी पत्नी ली छ्यूलान ही घर का सारा कामकाज संभालती थी। गृहस्थी की मुखिया होने के नाते परिवार के रजिस्टर में उसी का नाम दर्ज था और उत्पादन ब्रिगेड से प्राप्त होने वाले अनाज एवं धन के लिए स्वोछंग के स्थान पर उसी की सील-मुहर लगाई जाती थी।

दिन भर खेत पर काम करके स्वोछंग जब घर वापस आता तो भोजन करने के बाद वह मुंह पोंछता और तुरन्त रेडियो चालू कर देता। उसे रेडियो से प्रसारित किए जाने वाले समाचार एवं कृषकों के विशेष प्रोग्राम सुनने का बेहद शौक था। गाना और ऑपेरा के कार्यक्रमों से उसकी आंखें खुल जाती और दृष्टि विस्तृत होती। वह रोज केवल यही काम करता था। गृहस्थी के अन्य समस्त छोटे-बड़े काम जैसे, खाना पकाना, मुर्गीखाने की देखभाल करना, आदि उसने अपने पत्नी के लिए छोड़ रखे थे।

पिछले कुछ अर्से से दूर और पास के सभी किसानों को पंप वाले

कुंए बैठाने की धुन सवार हो गई थी। इससे उन्हें अपने घर के नजदीक ही नहाने-धोने का पानी फौरन मिल जाया करता था। स्वोछंग के गांव के अनेक परिवारों ने ऐसे कुंए खुदवा लिए थे। इस बारे में जब उसकी राय पूछी गई तो स्वोछंग ने केवल इतना ही कहा था, “मुझे अपनी पत्नी से सलाह करनी पड़ेगी।”

उसकी पत्नी ने उसे उत्तर दिया था, “हम भी कुंआ खुदवाएंगे। जो काम दूसरे कर रहे हैं, हम भी करेंगे। उनकी ही तरह हमारे हाथ-पैर और दिमाग भी सही सलामत हैं।”

और इसलिए स्वोछंग ने भी बड़े विश्वास-भरे शब्दों में अपने पड़ोसियों से कह दिया था, “हम भी कुंआ अवश्य खुदवाएंगे। अगर आप लोग खुदवा सकते हैं तो हम भी यह कर सकते हैं।”

स्वोछंग पूरे दिल से अपनी पत्नी के गुणगान गाता रहता था। वह थी भी बड़ी सुयोग्य महिला। उसके पांव बड़े थे और वह सिर के पीछे अपने बालों का गोल जूड़ा बांधती थी।

अपने पति से वह दस वर्ष छोटी थी। उसकी जबान धाराप्रवाह चला करती थी। हाथ के काम में बड़ी निपुण थी। घर के भीतर और बाहर के सारे काम वही किया करती थी। जैसे मौसम बदलने से पहले समस्त कपड़ों को तैयार कर लेना, छप्परबंदी करना, सुअर के बच्चों की बाड़े में देखभाल करना, आदि-आदि। वह हर काम बड़ी सावधानी से करती थी। छोटी से छोटी बात भी उसकी सूक्ष्म दृष्टि से छूट नहीं पाती थी। वर्षों के अभ्यास से वह हिसाब-किताब में भी बहुत निपुण हो गई थी। एक पैसा भी व्यर्थ नहीं नष्ट होने देती थी। फिर भी, जरूरत पड़ने पर वह अन्य किसी पुरुष से भी अधिक नरम दिल थी।

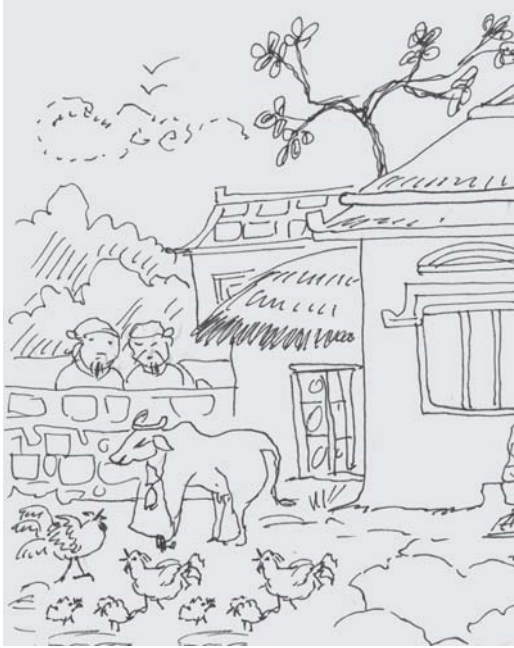
कुंआ खुदने से एक शाम पहले स्वोछंग ने अपनी चॉपस्टिक्स और भात का कटोरा सामने से हटाया और पीछे झुककर अपना पाइप सुलगाया और रेडियो चालू कर दिया। पहले तो वह बड़ा तल्लीन होकर उसे सुनता रहा, लेकिन फिर अचानक उसने रेडियो बंद कर

दिया। छ्यूलान भी बाहर के कमरे में तश्तरियां धोती रेडियो-प्रोग्राम में रस ले रही थी। उसने अपना गीला हाथ बढ़ाकर रेडियो चालू करने के लिए भीतर वाले कमरे की दीवार से लटकी सुतली खींची। फिर रेडियो की ओर कान लगाए और तश्तरियां धोना जारी रखा।

खीजा हुआ स्वोछंग पाइप पीता रहा। तीसरी बार पाइप की राख झाड़ चुकने के बाद उसने रेडियो फिर बंद कर दिया। छ्यूलान उत्तेजित हो उठी। वह तेजी से अन्दर आई और एप्रन से हाथ पोंछते हुए चिल्लाकर बोली, “सचमुच यह तो हद हो गई। तुम नहीं सुनना चाहते, लेकिन मैं तो सुनना चाहती हूँ।”

“मेरे सिर में दर्द हो रहा है।” वह बड़बड़ाया। “मैं थोड़ी देर सोना चाहता हूँ।” छ्यूलान का रोष तुरन्त हवा हो गया और कपाल छूने के लिए हाथ बढ़ाते हुए बोली, “बुखार तो नहीं है। क्या कुछ अस्वस्थ महसूस कर रहे हो?”

“हुम्म...”, वह बुदबुदाया।



“तो मैं तुम्हारे लिए मूंग का सूप बनाए देती हूँ। तुम हमेशा से लापरवाह हो, कभी किसी बात की फिक्र नहीं करते। अब बीमार पड़ गए न!”

कुछ देर बाद वह सूप बना लाई, जिसे दो चम्मच चीनी डालकर मीठा बना दिया था। स्वोछंग ने दो बड़े कटोरे खत्म कर दिए। इससे उसे ढेर-सा पसीना आया। वह लेट गया, लेकिन सारी रात बिस्तर पर करवटें

बदलता रहा और सो नहीं पाया। जब-तब बिस्तर से उठकर वह पाइप पीने लगता और उसकी राख पाइप से निकालकर खिड़की से बाहर फेंक देता था। सबेरा होने तक उससे और अधिक जब्त नहीं हुआ। उसने अपनी पत्नी को जगा दिया।

आंखें मलते हुए पत्नी ने पूछा, “क्या तबीयत अच्छी नहीं हुई?”

“मुझे एक विषय में तुमसे कुछ बातें करनी हैं।”

“बोलो।”

स्वोछंग ने उसे देखा और अपना सिर झुका लिया। वह अपना पाइप तम्बाकू की थैली के नजदीक तो ले गया, लेकिन कुछ देर तक उसे भरा नहीं। अधीर होकर छ्यूलान उठ बैठी और कपड़े बदलते हुए पूछा। “क्या जबान को लकवा मार गया है?”

अपने को संभालते हुए स्वोछंग फूट पड़ा, “हमें कुंआ नहीं खुदवाना चाहिए।”

“क्यों?”

“तुमने सुना नहीं, रेडियो पर क्या कहा जा रहा था?”

“क्या कहा जा रहा था?”

“तुम भी उतना ही जानती हो जितना मैं।”

छ्यूलान ने रजाई एक ओर सरका दी और बिस्तर से निकल आई। “तो उस बात को अपने पास ही रखो।”

स्वोछंग ने उसकी बांहें कस-कर पकड़ ली। “इतनी उत्तेजित मत हो। लो, मैं तुम्हें बताता हूँ।”

“अरे तो बोलो न। मेरे पास बरबाद करने को फालतू वक्त नहीं है।”

वह नजदीक खिसक आया और फुसफुसाकर कहने लगा, “हाओशान के पुराने जमींदारों और धनी किसानों का नाम अब फेहरिस्त में शामिल नहीं है। आठ साल तक जेल में रखे जाने वाले चाओ पाएवान का भी

नहीं।”

“मुझे मालूम है।”

“अब उनकी किस्मत जाग गई है। अब उनका और गरीब किसानों और खेत मजूरों का दर्जा एक-सा हो गया है।”

होंठ काटते हुए छयूलान बोली, “हां।”

स्वोछंग ने अपना पाइप सुलगाया और कश लेने लगा। “तो हम कुंआ नहीं खुदवाएंगे। कहीं हमारी सारी मेहनत बेकार न हो जाए।”

“क्यों?”

“तुम तो हमेशा एक ही लीक पर सोचने वाली औरत हो। मैं तुम्हें ईमानदारी से साफ-साफ कहे देता हूं। हमारा यह मकान जमींदार ल्यू चिनक्वेइ की मिलिकयत था। वह अभी भी जिन्दा है। मैंने सुना है कि उसका बेटा जापान में एक होटल का धनी मालिक है और उसने हमारी काउन्टी की सरकार को एक कार, टेलीविजन और बहुत-सी चीजें दी हैं। अगर ल्यू चिनक्वेइ मर भी जाए तो भी उसके बेटे-पोते हमारे इस मकान के दावेदार हो जाएंगे। एक-न-एक दिन हमें इस मकान से हाथ धोने पड़ेंगे। तुम कुछ दिन रुको और देखो कि ऊंट किस करवट बैठता है।”

“तुम तो बस हवाई घोड़े दौड़ा रहे हो।”

“मैं हवाई घोड़े दौड़ा रहा हूं? नहीं। क्या तुम्हें नहीं मालूम कि हमारी सरकार की नीतियां आए दिन बदलती रहती हैं? तुम किसी मामले में इतनी आश्वस्त मत बनी रहो।”

छयूलान ने सिर झुका लिया। कुछ बोली नहीं।

“घर-गृहस्थी के मामलों में मैंने हमेशा तुम्हारी राय को ही प्रधानता दी है। लेकिन इस एक मामले में तुम बात सुन ही लो। इससे तुम्हारा कुछ बिगड़ नहीं जाएगा।”

छयूलान ठठाकर हंस पड़ी।



“इसमें इस तरह हंसने की क्या बात है?” स्वोछंग परेशान हो उठा।

हंसी के मारे छ्यूलान का पेट फटने लगा। हंसते-हंसते वह पति को मुक्के जमाती जा रही थी। स्वोछंग ने जल्दी से अपनी हथेली से उसका मुंह बंद कर दिया और कहने लगा, “पागल मत बनो। दीवारों के भी कान होते हैं। पड़ोसियों की नींद हराम करना चाहती हो क्या?”

छ्यूलान ने उसकी ओर ताका। “बुद्धू कहीं के! तुम पर तो मेरा सूप बेकार हो गया। मैं यह कभी विश्वास नहीं कर सकती कि सूर्य पश्चिम से उदय होने लगेगा या कि कम्युनिस्ट पार्टी हमें मुसीबत में डाल देगी। अब समस्याओं के स्वप्न देखना बंद करो और फिर से सो जाओ।”

जब छ्यूलान ने बिस्तर छोड़ा, तब तक दिन चढ़ आया था। उसने सामने के कमरे की ओर आवाज लगाई, “शिनह्वाए, आज उठोगे नहीं? सूरज की रोशनी तुम्हारे कूल्हों तक चढ़ आई है।”

उसका सबसे छोटा अविवाहित बेटा शिनह्वाए बटन बंद करता कमरे में आया। “मम्मी, आपको मुझसे कुछ काम है?”

उसे कुछ पैसे देते हुए वह बोली, “जाकर मेरे लिए कुछ पटाखे खरीद लाओ।”

स्वोछंग बोला, “आज कौन-सा मौका है? हम नया घर तो नहीं बनवा रहे हैं।”

पत्नी खौंखियाई, “मैं चलाना चाहती हूँ पटाखे।”

नया मकान बनवाना शुरू करने से पहले किसानों में पटाखे चलाने की परम्परा थी। किसी ने कुंआ खुदवाते समय ऐसा नहीं किया था। लेकिन छ्यूलान अड़ गई। उसने अपने बेटे को आंगन के बीचोंबीच वह बांस पकड़कर खड़ा होने को कहा जिससे अब पटाखों की एक लम्बी कतार लटक रही थी। फिर उसने अपने पति से उन पटाखों में आग लगाने को कहा। बेचारे स्वोछंग ने कई तीलियां सुलगाई, पर वह

पटाखे नहीं चला पाया। छ्यूलान ने माचिस छीनकर खुद ही पटाखों में आग लगा दी।

शोर सुनकर आंगन में भीड़ जमा हो गई। बच्चे इधर-उधर दौड़कर बिना चले पटाखे बीनने लगे। धुएं में कागज के टुकड़े तैरने लग गए। दृश्य काफी रोमांचक बन गया।

छ्यूलान चिल्लाई, “शिनह्वाए, बांस को जरा और ऊंचा करके पकड़ो।”



आपस में फुसफुसाते दर्शक आश्चर्य में थे कि छ्यूलान जैसी मितव्ययी गृहणी व्यर्थ क्यों पैसे बरबाद कर रही है। जैसे ही आखिरी पटाखा चल चुका, छ्यूलान ने स्वोछंग के हाथ में फावड़ा थमा दिया और ऊंची आवाज में बोली, “शिनह्वाए के पप्पा, खोदना शुरू करो।”

बिना समझे बूझे, स्वोछंग उत्साह में भरकर जमीन खोदने लग गया।

2

जब कुंआ बीस फुट नीचा खुद गया तो वहां चट्टान निकल आई। अभी तक पानी का कहीं पता नहीं था, इसलिए स्वोछंग उस गड्ढे को भरवा देना चाहता था। लेकिन छ्यूलान इसके लिए कतई राजी नहीं हुई। उसका कहना था कि उनका कुंआ भी पड़ोसी के कुएं की ऐन सीध में बन रहा है। इसलिए, देर-सबेर, हम

भी पानी की सतह तक पहुंच ही जाएंगे।

शायद पानी इसी चट्टान के नीचे निकल आए। उसने चट्टान को उड़ा देने के लिए संगतराश को बुलवा लिया।

विस्फोट तैयार हो चुके, तभी लाउड-स्पीकर पर छ्यूलान को ब्रिगेड के खजांची के पास एक आवश्यक कार्य के सिलसिले में जाने की घोषणा सुनाई दी। वह उस समय खिड़कियों के शीशों पर कागज की चिप्पियां चिपकाने में व्यस्त थी ताकि वे धमाके से चटक न जाएं। इसलिए उसने अपने पति से कहा, “जरा जाकर देखो तो, मामला क्या है।”

“लेकिन वे तो तुमसे बात करना चाहते हैं,” स्क्वॉल ने घबराहट में हथेलियां मलते हुए उत्तर दिया।

“बेवकूफी मत करो। तुम क्या एक संदेशा तक नहीं ले आ सकते?”

स्क्वॉल कुछ ही देर बाद लौट आया और अपनी पत्नी को घर के भीतरी कमरे में खींचकर ले गया। उसने कहा, “शिनह्वाए की मम्मी, ल्यू... ल्यू... चिनक्वेइ आ पहुंचा है।” वह इतना आशंकित हो गया था कि उससे ठीक से बोला तक नहीं जा रहा था।

स्तम्भित छ्यूलान दरवाजे का सहारा लेकर खड़ी रही।

“वह काउन्टी की अतिथिशाला में ठहरा है। उसने कहा है कि वह कल अपना पुराना घर देखने आएगा। उसके दिमाग में क्या है, यह तो तुम सोच ही सकती हो।”

छ्यूलान की जबान अकड़ गई थी।

“अब हम क्या करेंगे? कोई काउन्टी से आया हुआ है। कोई महत्वपूर्ण अफसर दिखता है। वह बोल भी उसी तरह रहा था। अभी इस वक्त, वह पार्टी के सेक्रेटरी के साथ एकाउन्ट दफ्तर में बात कर रहा है। उसने कहा है कि वह एक मिनट बाद ही यहां आ पहुंचेगा।”

“किसलिए?”

“हमारा मकान देखने। उसने कहा था कि वे लोग यहां पर ल्यू चिनक्वेइ का स्वागत-सत्कार करेंगे। दफ्तर के बाहर एक ट्रक खड़ा है जिस पर आराम कुर्सियां, कालीन और लकड़ी के पलंग लदे हुए हैं। ल्यू चिनक्वेइ के पास जो फर्नीचर था, उससे कहीं ज्यादा शानदार हैं वे सारी चीजें।”

छ्यूलान ने एक मिनट सोचा। “तुम्हें डर लग रहा है?”

“ल्यू चिनक्वेइ से? हूं,” स्वोछंग ने थूकते हुए कहा, “जब मैंने भूमि-सुधार के जमाने में सार्वजनिक सभा में उसके साथ की थी, उस समय मुझे उससे डर नहीं लगा था तो भला अब क्यों लगने लगा? मुझे तो सिर्फ यही डर है कि इस बार उसके खिलाफ हमारी लड़ाई में शायद मुझे कोई समर्थन न मिले। उस सरकारी अफसर की बातों से तो ऐसा लग रहा था मानो ल्यू कोई सम्राट हो और मैं गंवई-गांव का उजड़ु देहाती।”

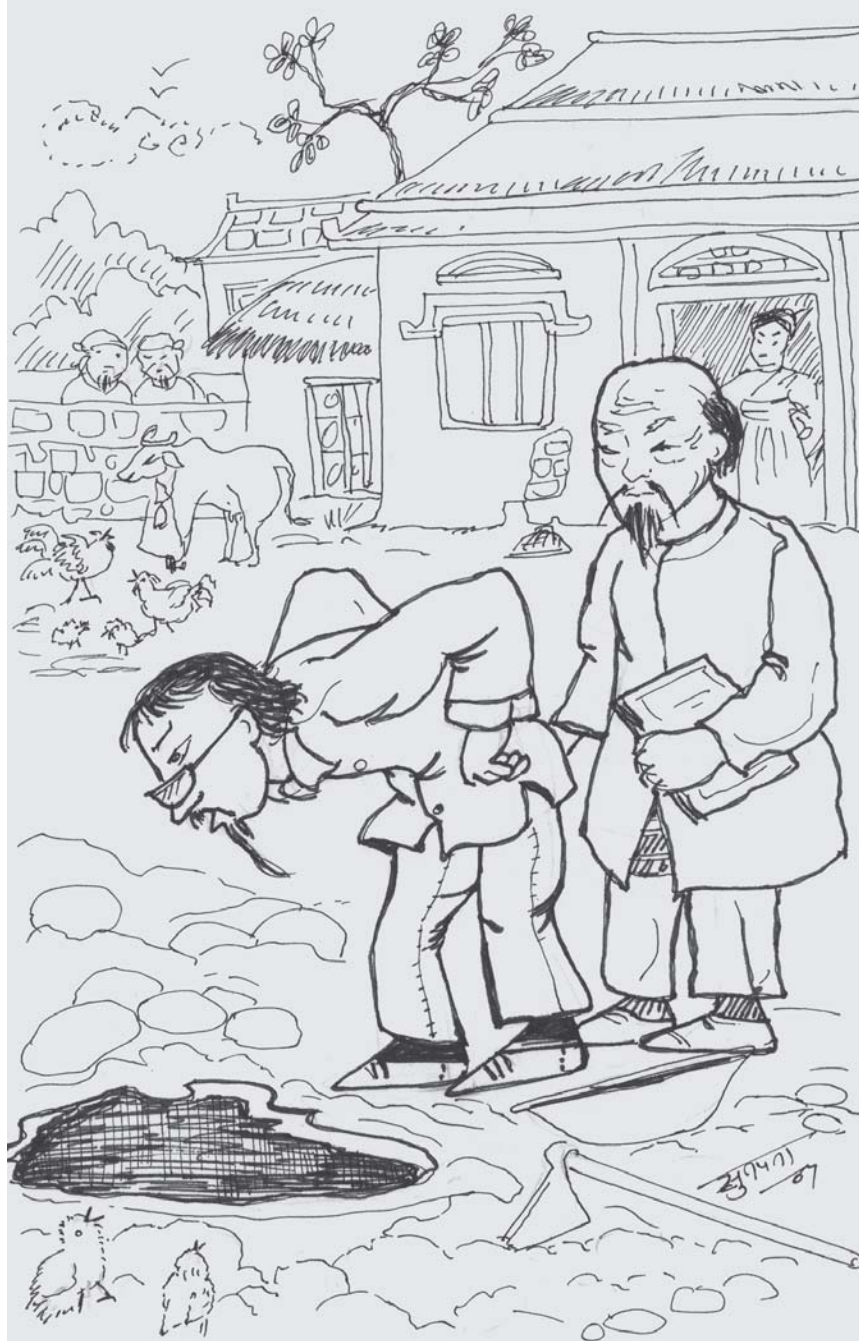
“उस घृणित दृश्य के बारे में मुझसे कुछ मत कहो। तुम सब कुछ मुझपर छोड़ दो। तुम तो जाकर संगतराश से चट्टान उड़ा देने को कहो।”

स्वोछंग को हिचकिचाते देख छ्यूलान ने गुर्ग कर कहा, “यह हमारा घर है, हमारा आंगन है। यहां हम अपनी मर्जी से जो चाहेंगे, करेंगे। हम क्यों किसी से डरें?”

खिड़की से बाहर देखते स्वोछंग ने कुछ लोगों को आंगन में घुसते देखा। उसने छ्यूलान की आस्तीन खींची और फुसफुसा कर कहा, “लो, वे लोग भी आ पहुंचे हैं। सबसे आगे वही अफसर है।”

भौंह पर लटक आई बालों की एक लट को पीछे हटाती छ्यूलान विश्वास-भरे सधे कदमों से बाहर निकली और दरवाजे का सहारा ले आगन्तुकों का जायजा लेने के लिए आंखें गड़ाकर देखने लगी।

सबसे आगे काउन्टी प्रशासन के प्रशासनिक दफ्तर का निदेशक



सुन था। जैसे ही वह आंगन में घुसा उसने किसी तुनकमिजाज इन्सपेक्टर की नजरों से चारों ओर देखा और बोला, “कितनी गंदगी है इस जगह! अब यहां कुआं खुदवाने का क्या तुक है? इससे कोई फायदा नहीं होने वाला।”

बड़ी सावधानीपूर्वक चलकर कुंए के कगार तक गया और झुककर अंदर देखने लगा। फिर मुड़कर बूढ़े पार्टी सेक्रेटरी से पूछा, “क्या यह कल तक बनना खत्म हो जाएगा?”



“नहीं, इसमें कम से कम चार दिन और लग जाएंगे।”

सुन कुछ देर तक सोचता रहा, फिर निर्णयात्मक स्वर में बोला, “तो फिर इसे भरवा दीजिए। इतनी गंदी जगह हमारे सम्मानीय अतिथि के देखने योग्य कदापि नहीं है। और, किसी भी देश में लोग इतनी आदिम पद्धति से कुंआ नहीं खुदवाते। अगर वे लोग इसे देख लेंगे तो हम चीनवासियों के लिए कितनी बदनामी की बात होगी?”

“इन लोगों ने बहुत सारा काम खत्म कर लिया है।”

फिर भी सुन का आग्रह था, “इसे फौरन भरवा दीजिए। व्यापक हितों को आंशिक हितों पर प्राथमिकता मिलनी ही चाहिए। चलिए, अब चलकर घर देख लिया जाए।”

वह घर की ओर बढ़ ही रहा

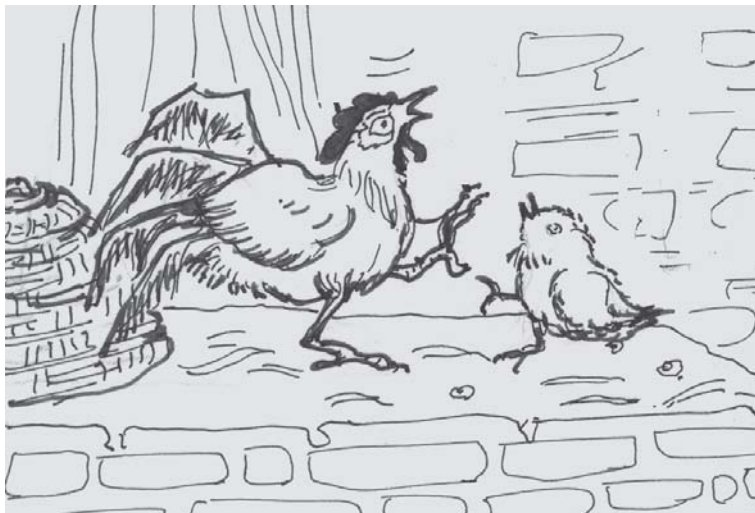
था कि एक क्रोध से भरी महिला को उसने अपना रास्ता रोके खड़ा पाया। उसके दोनों हाथ, चौखट को दोनों ओर से थामे थे। वह आंखें सिकोड़कर उनकी ओर एकटक देख रही थी।

सुन स्तम्भित रह गया। पार्टी-सेक्रेटरी ने परस्पर परिचय कराया। इस लघु औपचारिकता की समाप्ति पर सुन मुस्करा उठा, “तो आप ही कामरेड ली छ्यूलान हैं। मैंने आपके बारे में बहुत कुछ सुना है।” उसने शिष्टतापूर्वक अपना हाथ बढ़ाया।

किन्तु छ्यूलान ने उसकी उपेक्षा कर दी और वहां से हटी नहीं। उसका चेहरा निर्विकार बना हुआ था। “आप किससे मिलना चाहते हैं? क्या आपको पता नहीं कि इस मकान का एक मालिक भी है?”

सुन मुंह बाए खड़ा था और स्वोछंग पीछे से अपनी पत्नी की आस्तीनें खींच रहा था। छ्यूलान ने उसका हाथ एक ओर झटक दिया। सुन के चेहरे पर अपनी आंखें गड़ाकर उसने पूछा, “अगर आपको यह मालूम है कि इस घर का एक मालिक भी है, तो आपको पहले अपना परिचय खुद देना चाहिए था। मैंने आज तक आप जैसा





घुसपैठिया नहीं देखा जो लोगों के घर में घुसकर उनके निजी मामलों में अपनी टांग अड़ाए। आखिर इस घर का मालिक कौन है, बताइए? मैं आपसे पूछ रही हूँ।”

सुन का चेहरा लाल पड़ गया था। उसका खून खौल रहा था। लेकिन उसने सोचा कि वह एक महत्वपूर्ण अफसर है। इस नाते ऐसी जाहिल गांववाली से बहस में उलझना उनकी प्रतिष्ठा के अनुकूल नहीं होगा।

“छ्यूलान, डाइरेक्टर सुन यहां अपने सरकारी काम के सिलसिले में आए हैं। तुम जरा समझने की कोशिश तो करो,” पार्टी सेक्रेटरी ने कहा।

“मैं साफ बात कहने वाली हूँ। जहां तक काम की बात है तो मैं भूमि-सुधार आंदोलन के समय से ही अपने नेताओं के साथ सहयोग करती रही हूँ। उन दिनों में भी जब लोग ल्यू वंश की खुशामद नहीं किया करते थे, तब भी वे मेरे घर चाहे जब आ जाया करते थे। घर की रखवाली के लिए मैंने कभी कुत्ते नहीं पाले। पहले की तरह ल्यू चिनक्वेइ आज भी आ सकता है। लेकिन मैं उसकी फरमाबरदार

नौकरानी की तरह उसका स्वागत करने वाली नहीं। मैं हरेक के साथ एक-सा बर्ताव करती हूँ, चाहे वह अफसर हो या न हो। अभी दो दिन पहले ही काउन्टी के पार्टी सेक्रेटरी चांग आए थे तो उन्होंने घर में घुसते ही पहले मेरा आंगन खुद झाड़ा था। लेकिन डाइरेक्टर सुन की राय में यह बहुत गंदा है। यह किसी कुंआरे-कुंआरी का घर नहीं है। यहां मुर्गों की बीट छितरी रहती है, टूटी ईंटों और खपरैलों के टुकड़े बिखरे रहते हैं। फिर हमारे आंगन में गंदगी नहीं होगी तो और कहां होगी? और हमें अपना कुंआ क्यों भरवाना पड़ेगा? सिर्फ ल्यू की खातिर? अगर आपको लग रहा हो कि मेरा घर आपकी प्रतिष्ठा के अनुकूल नहीं है तो ले जाइए उसे काउन्टी के मुख्य नगर के विदेशी तर्ज के मकानों में। वहां कीजिए खातिर अपने प्रतिष्ठित मेहमान की। लेकिन अगर आप इसे यहां लाते हैं तो उसे घर की मालकिन होने के नाते मेरा सम्मान करना ही पड़ेगा। बस, सौ बातों की एक बात यह है।”

पार्टी सेक्रेटरी मौन खड़ा सुने जा रहा था। स्वोछिंग कहीं अंदर के कमरे में गायब हो गया था।

सुन बेहद खीजा हुआ था, किन्तु उसने स्वयं पर नियंत्रण बनाए रखा। मुंह पर जबरन मुस्कान बिखेरता वह कहने लगा, “कामरेड छ्यूलान, मैं आपकी भावनाएं समझ रहा हूँ। लेकिन आपको भी अपनी पुरानी कृषक मनोवृत्ति से जकड़े नहीं रहना चाहिए। आज मिस्टर ल्यू चिनक्वेइ विदेश में बसे एक सम्मानित चीनी नागरिक हैं। हमें अपने देश को आधुनिक बनाने के लिए...”

छ्यूलान ने बात बीच में ही काट दी। “राष्ट्रीय मामलों की जानकारी आपको मुझसे कहीं अधिक है। आप तो मुझे सिर्फ इतना बता दें कि आप मुझसे क्या चाहते हैं।”

बाहर ट्रक के फर्नीचर उतारे जाने और आंगन में लाए जाने के कारण बहुत शोरगुल हो रहा था। पलंग और आराम कुर्सियों की ओर इशारा करते हुए सुन बोला, “आप इन्हें अपने कमरों में सजा दें ताकि



गृहस्वामिनी

मिस्टर ल्यू को दिखाया जा सके कि हमारे समाजवादी गांवों में जिन्दगी कितनी समृद्ध हो गई है।”

छयूलान बड़े गौर से उस कीमती फर्नीचर को देखे जा रही थी।

“क्यों, कैसा लगा आपको?”

छयूलान ने धूर्तता-भरी मुस्कान से पूछा, “आपका मतलब है कि इसके बाद यह सारा फर्नीचर मेरा हो जाएगा? यह तो बड़ी अच्छी बात होगी। मैं इसे शिनह्वाए की शादी के लिए रख छोड़ूंगी।”

“ना-ना-ना,” सुन अपना सिर जोर-जोर से हिला रहा था।

पहले तो छयूलान हंसी, लेकिन फिर उसका मुंह उतर गया। “तो फिर आप इसे यहां क्यों लाए हैं? सिर्फ दिखावा करने को? मुझे इसकी कोई जरूरत नहीं है।”

हाथ हिलाते हुए उसने आज्ञा सुनाई, “ले जाओ यह सारा फर्नीचर। मुझे नहीं चाहिए। मेरा आंगन इसके लिए बहुत गंदा है। मेरा घर किसी दुकान की प्रदर्शन-खिड़की नहीं है।”

“छयूलान!” पार्टी सेक्रेटरी का स्वर कठोर हो गया था।

सुन ने क्रोध में अपना पांव पटका। “यही रहने दो इसे। और, यह कुंआ अभी, इसी वक्त, फौरन भर दो।”

“अभी? इसी वक्त? फौरन? मेरे ही घर पर मुझ पर हुक्म चलाएंगे?”

छ्यूलान कुंए के कगार पर दौड़ी-दौड़ी पहुंची और कुंए के अन्दर बैठे संगतराश से चिल्लाकर बोली, “फ्यूज जलाओ।”

“ठी... क... है,” नीचे से आवाज आई।

सारे दर्शक हक्के-बक्के खड़े थे।

स्वोछंग अपने कमरे से लड़खड़ाता हुआ निकला और पत्नी से सिफारिश करने लगा, “इतनी जिद मत करो। वे जो चाहते हैं, उन्हें कर लेने दो।”

छ्यूलान ने उसे एक ओर हटा दिया। “अब तुम पहले जितने सावधान नहीं रहे। कुंए से दूर रहो।” फिर वह सुअरों के बाड़े की दीवार पर जा चढ़ी, दोनों हथेलियों को जोड़कर मुंह से लगाया और जोर से चिल्लाई, “पड़ोसी भाइयो, हम अपने फ्यूज जलाने जा रहे हैं। आप घर की खिड़कियां खोल दीजिए ताकि उनके शीशे न टूट जाएं।”

चारों ओर से प्रतिध्वनि आ रही थी, “फ्यूज जलाओ।”

सुन क्रोध से पीला पड़ गया था। “फर्नीचर वापस ले जाओ। जल्दी,” जो लोग फर्नीचर लाए थे उनसे चिल्लाकर उसने कहा।

मन ही मन खुश होता बूढ़ा सेक्रेटरी वहां से चला गया।

एक छोटा धमाका सुनाई दिया। धरती कांप उठी। सब लोग कुंए की ओर दौड़े। छ्यूलान एक पेड़ के नीचे खड़ी रही। उसके झुर्रीदार चेहरे पर आंसू ढुलक रहे थे।

3

इसके अनेक वर्ष पूर्व एक दिन बहुत बर्फ गिरी थी।

शाम के झुटपुटे में एक सड़क पर एक घोड़ा-गाड़ी चली जा रही थी। घोड़े की गर्दन में बंधी घंटियां टनटनाए जा रही थीं। चिथड़े पहने युवा कोचवान सीट पर बैठा, हाथ में चाबुक संभाले सर्दी से कांप रहा था।



सहसा गाड़ी रुकी और कोचवान कूदकर नीचे उतर आया और सड़क पर बर्फ में दबी किसी चीज को चाबुक के डंडे से उलटने-पुलटने लगा। फिर वह जमीन पर उकड़ूं बैठ गया और हाथों से बर्फ हटाने लगा। तब उसे पता चला कि वह सड़ी से अकड़ गई एक भिखारिन बच्ची थी, जिसके एक हाथ में एक खाली टोकरी भी थी।

गाड़ी के अन्दर से तेज आवाज आई, “गाड़ी बढ़ाओ।”

बच्ची को हाथों में उठाए कोचवान वापस आया और आदरपूर्वक बोला, “हुजूर...”

गाड़ी की खिड़की पर पड़ा पर्दा तनिक-सा हटा और उसके पीछे से दो टिमटिमाती आंखें नजर आईं। ल्यू चिनक्वेइ ने पर्दे के पीछे से कहा, “इसे नीचे रख दो।”

“मेहरबानी कर इसे बचा लीजिए, सरकार!,” नौजवान ने प्रार्थना की।

“वह मर गई तो क्या उसके लिए कफन तू खरीदेगा?”

नौजवान ने फिर से आंसू भरी आंखों से विनती की।

ल्यू बड़बड़ाया, “वसन्तोत्सव के पहले यह कैसा अपशगुन हो गया। इसे रख दो।”

दांत पीसते हुए नौजवान ने बच्ची को सड़क पर वापस रख दिया और उसे अपनी रुई की जैकेट से ढंक दिया। उसने घोड़े पर चाबुक सटकाई और गाड़ी फिर से सड़क पर खड़खड़ाने लग गई। गांव पहुंचते-पहुंचते अंधेरा हो गया था। घोड़े को उसके खूंटे से बांध वह नौजवान जल्दी-जल्दी उसी जगह वापस जा पहुंचा जहां उसने बच्ची को छोड़ा था और उसे अपनी झोंपड़ी में ले आया।

घर में आग नहीं थी, इसलिए उसे गर्म रखने के लिए रात भर वह उसे अपनी छाती से चिपकाए बैठा रहा। सबेरा होने पर लड़की ने अपनी आंखें खोल दीं।

उत्तेजना में भरा नौजवान मालिक के पास पहुंचा। “वह जिन्दा है सरकार, वह जिन्दा है।” उसकी आंखों में खुशी के आंसू चमक रहे थे। उसने ल्यू से उसे रख लेने की प्रार्थना की और बिना किसी वेतन के पूरे साल भर काम करने का वायदा भी किया।

दस वर्षीय नाटी दुबली छयूलान को दिन भर गेहूं पीसते, मैदा छानते, कपड़े धोते, सब्जियां साफ करते कठोर परिश्रम करना पड़ता था। ल्यू उस पर हुक्म चलाया करता। उसके कुत्ते तक उसे डराते हुए भौंकते थे। आतंक में डूबी वह अपने काम-धन्धे में लगी रहती। सिर्फ अपनी झोंपड़ी में लौटने पर ही उसे स्नेह की ऊष्मा मिल पाती थी। वहां नौजवान कोचवान स्वोछंग उसके बड़े भाई सरीखा अभिभावक बन गया था। भाग्य ने दोनों को परस्पर बांध दिया था।

सात वर्ष बाद छयूलान जवान हो चुकी थी।

एक दिन उसने स्वोछंग से पूछा, “स्वोछंग भैया, आप तो अब करीब तीस साल के हो गए। आप शादी क्यों नहीं कर लेते?”

स्वोछंग ने बड़ी ईमानदारी से उत्तर दिया, “मुझ जैसे गरीब मजदूर से कभी कोई लड़की शादी नहीं करेगी।”

“आपको मैं पसंद हूँ?”

स्वोछंग भौंचक्का रह गया।

“अगर आप मुझे नापसंद नहीं करते, तो मुझसे ही शादी कर लीजिए।”

“नहीं-नहीं,” स्वोछंग ने आपत्ति की थी।

“मुझसे शादी कर लीजिए, स्वोछंग भैया,” कहते हुए छयूलान की आंखें चमक रही थीं। “हम यहां से कहीं दूर जाकर अपना घर बसा लेंगे। मैं सारी जिन्दगी आपकी सेवा करती रहूंगी।”

स्वोछंग ने उसे चुप तो करा दिया था, लेकिन उसका दिल तेजी से धड़क रहा था। “और कुछ मत कहो। मालिक सुन लेंगे।”

“सुन लेगा तो क्या? यहां से मेरा जी भर गया है। इससे तो भीख मांगना कहीं अच्छा है।”

एक निःश्वास भरकर वह बाहर निकल गया था।

एक दिन ल्यू ने उससे पूछा, “स्वोछंग, तू छ्यूलान से शादी करना चाहता है?”

“नहीं ... नहीं।”

ल्यू हंस पड़ा।

एक शाम जब स्वोछंग किसी काम पर से वापस लौटा तो उसने छ्यूलान को झोपड़ी में रोते हुए सुना। अंदर गया तो देखा कि एक बूढ़ा गंजा आदमी छ्यूलान को अपनी ओर खींच रहा था और हाथ में गुड़गुड़ी लिए ल्यू उसे धक्के मार रहा था। दोनों हाथों से चौखट को कसकर थामे छ्यूलान वहां से हटने का नाम नहीं ले रही थी।

स्वोछंग को देखते ही उसने खुद को उनसे छुड़ाया और रोती हुई उससे जा चिपटी। “बचा लीजिए, स्वोछंग भैया, मुझे बचा लीजिए।”

उसे थामकर स्वोछंग ने ल्यू की ओर भावशून्य दृष्टि से देखा।

गुड़गुड़ी में कश लगाता ल्यू कहने लगा, “तुम बहुत सही वक्त पर लौट आए हो। अपनी बहन से विदा ले लो। इसका विवाह बहुत जल्द ही एक अच्छे परिवार में हो जाएगा और यह सुखी जिन्दगी बिता सकेगी। ये हैं मिस्टर ली।”

छ्यूलान रोए जा रही थी, “इसने मुझे बेच दिया है।”



यह तो मानो ब्रजपात हुआ! “हुजूर आपा” स्वोछंग आगे कुछ बोल नहीं पा रहा था।

सिर झुकाए ल्यू गुड़गुड़ी में कश लगाए जा रहा था।

गंजे ली ने स्वोछंग की ओर संदेहभरी दृष्टि डाली और फिर उग्र स्वर में छ्यूलान से पूछा, “यह कौन है?”

ल्यू ने उत्तर दिया, “इसका भाई है।”

छ्यूलान अपने होंठ चबाती चुपचाप खड़ी रही।

मिस्टर ली ने हाथ बढ़ाकर छ्यूलान की ठोड़ी ऊपर उठाई, “क्या तुम इसके साथ सोई हो? बोलो, जवाब दो।”

छ्यूलान ने अपनी कोहनी से उसका हाथ दूर हटाया और पूरा जोर लगाकर बोली, “हां, मैं इसके साथ सात साल से सो रही हूं। मैं बहुत पहले ही इसकी हो चुकी हूं।”

ल्यू चिनक्वेइ स्तम्भित रह गया।

लज्जा में डूबा स्वोछंग हकलाया, “तू... तुम...”

छ्यूलान ने रोते-रोते अपना सिर उसकी बांहों में छिपा लिया। स्वोछंग भी रोने लगा था। मिस्टर ली एक सर्द हंसी हंसा। “मिस्टर ल्यू, आप इस वेश्या को मेरे सिर मढ़ना चाह रहे थे? और, वह भी इतने ऊंचे दामों पर?”

उसने अपनी जेब से करारनामा निकालकर टुकड़े-टुकड़े कर दिया और वापस जाने को मुड़ा। ल्यू ने उसे रोकना चाहा था, लेकिन वह बिना पीछे देखे बाहर चला गया। गुस्से से पीला पड़ा ल्यू छ्यूलान के बाल पकड़कर खींचने लगा और उसने अपनी गुड़गुड़ी उसके कपाल पर दे मारी।

4

आंगन पर छाया धुआं उड़ चुका था।

अनजान में ही छ्यूलान ने ल्यू चिनक्वेइ की गुड़गुड़ी की मार के

निशान को छूने के लिए अपना हाथ माथे की ओर बढ़ाया। आज भी उसे वहां पीड़ा-सी महसूस हुई। ल्यू ने भले ही उसके प्रति किए गए अन्यायों को भुला दिया हो, छ्यूलान को वे सब आज भी याद थे।

दरवाजे पर खड़े-खड़े उसने प्रवेश द्वार के ऊपर टाइल्स के बने मेहराब पर नजर डाली। उसने अपने जीवन का बड़ा भाग यहीं बिताया था। पहले एक दासी और अब गृहस्वामिनी के रूप में। पहले वह दरिद्र थी और अब, अमीर न होते हुए भी वह सुखी थी। जिस दिन वह ल्यू के घर से माथे पर रिसता खून लिए भाग निकली थी, उसके गरीब ग्रामवासियों ने उसे एक छोटा शेड बनाने में उसकी मदद की थी। यहीं उसने स्वोछंग से विवाह किया था।

विवाह के दूसरे दिन ही जब स्वोछंग कुछ छुटपुट काम निबटाने के लिए बाहर गया था, वह फिर भीख मांगने निकल पड़ी थी। उसे अब अपना एक घर हो जाने की प्रसन्नता थी।

1947 में जब गांव मुक्त हो गया, किसानों ने ल्यू के साथ अपने पुराने बैर चुकाए। आज का बूढ़ा पार्टी सेक्रेटरी उस समय किसान-सभा का सभापति था। वही स्वोछंग और छ्यूलान को ल्यू के घर ले गया था।

“आज से यह घर तुम्हारा है। यह तुम्हारे खून-पसीने की कमाई है। आज से यह मकान तुम्हारा, तुम्हारे बेटे-पोतों का रहेगा।”

छ्यूलान काले प्रवेश-द्वार पर झुकी रोने लगी। उस दिन के बाद से उसे कभी ऐसा नहीं लगा कि यह मकान कभी उससे छीना जाएगा, उन दिनों में भी नहीं, जब परिस्थितियां बहुत खराब हो गई थीं।

1948 में जब क्वोमिनतांग ने मुक्त आधार-क्षेत्र पर हमला चलाया था और जमींदारों की ‘घर वापस लौटने वाली’ फौजी टुकड़ी गांव वापस आ गई थी, तो कुछ डरपोक ग्रामवासियों ने भूमि-सुधार के दिनों में मिली समस्त वस्तुएं ल्यू को वापस लौटा दीं। उस समय भी छ्यूलान ने कुछ नहीं लौटाया। ल्यू चिनक्वेइ इतना चालाक तो था ही

कि उसने उतावली में कोई दुस्साहसी कदम नहीं उठाया।

क्वोमिनतांग फौजें जब चीन की मुख्य भूमि से हट गईं, तब वह और उसका पुत्र भागकर पहले थाएवान और फिर विदेश चले गए। 1962 में जब क्वोमिनतांग ने तटवर्ती क्षेत्रों में लोगों को परेशान करने के लिए छोटी-छोटी फौजी टुकड़ियां भेजनी शुरू कीं तो स्वोछंग घबरा उठा था। लेकिन छ्यूलान तब भी नहीं डरी।



उसका विश्वास था कि कम्युनिस्ट शासन को कोई डिगा नहीं सकेगा।

अब समस्त जमींदारों और धनी कृषकों का पुनः वर्गीकरण कर दिया गया था। वे पहले वाले वर्ग में नहीं रह गए थे। यह समझ में आने वाली बात थी, क्योंकि वे वर्षों से दलित बने रहे थे और उनमें से अनेक ने नई जिन्दगी जीनी शुरू कर दी थी। लेकिन सुन के दिमाग में कौन-सी चाल भरी थी? क्या उसे कम्युनिस्ट पार्टी ने कुछ संकेत दिए थे?

छ्यूलान को गर्मी लग रही थी और उसका माथा भारी हो रहा था। कुंए पर जाने के बजाय वह सीधी अपने कमरे में गई और जाकर बिस्तर पर लेट गई। स्वोछंग ने जब डॉक्टर बुलाने और उसके लिए मूंग का सूप तैयार करने की बात कही, तो वह बोली, “इतना हंगामा करने की क्या जरूरत है? तुम जरा मेरा माथा दबा दो।” स्वोछंग उसके कपाल पर अंगूठों से मालिश करने लगा।

शाम को जब पार्टी सेक्रेटरी आया तो छ्यूलान ने उससे पूछा,

“क्या यह सच है कि पुरानी व्यवस्था फिर से लागू कर दी जाएगी?”

पार्टी सेक्रेटरी ने अपना पाइप सुलगाया और बिस्तर के किनारे बैठ गया। उसने मुस्कराते हुए उत्तर दिया, “मुझे ताज्जुब है कि तुम्हारे जैसी मजबूत महिला ऐसा प्रश्न क्यों कर रही है।”

स्वोछंग ने समर्थन करते हुए कहा, “छ्यूलान ठीक ही पूछ रही है। लग रहा है कि हवा फिर से धनी और शक्तिसम्पन्न लोगों के अनुकूल बहने लगी है।”

“बेवकूफी की बातें मत करो, स्वोछंग। याद रखना कि यह एक कम्युनिस्ट राज्य है।”

“डाइरेक्टर सुन जैसे कम्युनिस्टों के लिए मेरे दिल में कोई इज्जत नहीं है।”

“तो फिर तुमने कल उससे सवाल-जवाब क्यों नहीं किए?”

छ्यूलान ने अपने पति की ओर रोष भरे नेत्रों से देखा और कहा, “ये तो डर के मारे कुछ बोल ही नहीं पाते।”

पार्टी सेक्रेटरी ने स्वोछंग को झेंप से लाल होते देखा तो हंस पड़ा। छ्यूलान ने बोलना जारी रखा, “लेकिन सुन तो यहां एक कम्युनिस्ट अफसर की हैसियत से ही आया था।”

सेक्रेटरी ने जब पाइप में कश लगाया तो उसकी तम्बाकू सुर्ख हो उठी।

“यह तुमने एक पते की बात की है। उस जैसे नालायक कम्युनिस्टों के कारण हमारी पार्टी की प्रतिष्ठा को बहुत धक्का लगा है और लोग अब पहले की तरह आश्वस्त नहीं रह गए हैं। सुन और उस जैसे लोग केवल राजनीतिक हवा के साथ बहना ही जानते हैं। वे अपनी शक्ति का दुरुपयोग लोगों को डराने-धमकाने के लिए करते हैं। वे सबके सब निकम्मे हैं। ऐसे लोग क्या करते हैं, क्या कहते हैं— इससे हमें कम्युनिस्ट पार्टी के बारे में फैसला नहीं कर लेना चाहिए। क्यों स्वोछंग ठीक है न?”

“जी, मैं आपसे सहमत हूँ।”

विचारों में खोई छ्यूलान होंठ चबा रही थी।

पार्टी सेक्रेटरी ने पाइप से राख झाड़ते हुए पूछा, “क्यों छ्यूलान, तुम्हारा क्या ख्याल है?”

मुस्कराते हुए छ्यूलान ने पलटकर प्रश्न किया, “हम कल क्या करेंगे?”

“अतिथि सत्कार करने वाली तो तुम हो। तुम जो चाहोगी, जैसे चाहोगी, वह करने के लिए हम तुम्हें स्वतंत्र छोड़ देंगे।”

उसने उसे बताया कि कुछ देर पहले ही एक काउन्टी-क्लर्क ने फोन किया था कि काउन्टी के पार्टी सेक्रेटरी चांग ने सुन की कड़ी आलोचना की है। उसने सुन से साफ कह दिया है कि यह निर्णय गांव के लोगों पर ही छोड़ दिया जाना चाहिए कि वे ल्यू चिनक्वेइ का स्वागत किस तरह करेंगे, क्योंकि वह यहां सैर के लिए ही आ रहा है। कल के लिए काउन्टी प्रशासन ल्यू को एक कार दे देगा और उसके साथ काउन्टी का कोई भी अधिकारी नहीं आएगा।

छ्यूलान ने तसल्ली की सांस ली।

सेक्रेटरी ने स्वीकार किया, “ईमानदारी की बात यह है कि पहले तो मैं भी नहीं समझ पाया था कि हम अपने कट्टर शत्रु का स्वागत एक सम्मान्य अतिथि के रूप में क्यों करेंगे। लेकिन बाद में मैंने महसूस किया कि मैं समय से काफी पिछड़ गया हूँ। हमने उस जैसे लोगों के साथ वर्षों तक शत्रुओं जैसा व्यवहार किया है। यह अन्याय है। यदि उन लोगों का व्यवहार ठीक हो और वे पार्टी तथा समाजवाद का समर्थन करते हों तो उनके साथ हमेशा भेदभाव बनाये रखना गलत बात होगी। और फिर ल्यू चिनक्वेइ तो देशभक्त है। वह चीनी है।”

स्वोच्छंग बड़े ध्यान से सुन रहा था।

अपना सिर उठाकर छ्यूलान ने कहा, “आप कृपया सेक्रेटरी चांग को फोन कर दें और उनसे कह दें कि मेरी अन्तरात्मा भी एक

चीनी की ही है और मैं कभी भी कम्युनिस्ट पार्टी का कोई अपकार नहीं करूंगी। और... कृपया मेरी ओर से ल्यू को यहां आने का निमंत्रण दे दें।”

सेक्रेटरी प्रसन्नता से मुस्करा उठा।

स्वोछंग ने पूछा, “हम कुंए का क्या करें?”

“अपना काम चालू रखो।”

5

कुंए के सहारे एक औंधा पड़ा ठेला रखा था जिसके पहिए से स्वोछंग और उसका परिवार कुंए के नीचे से पत्थर से भरी टोकरियां ऊपर लाने के लिए गरारी का काम ले रहे थे। वे सब एक साथ काम में जुटे थे। बीच-बीच में छ्यूलान चीख उठती थी “एक, दो, खींचो।”

आंगन प्रातःकाल की धूप में नहा रहा था। सुअरों ने भरपेट भोजन कर लिया था और अब वे अपने बाड़े की दीवार से शरीर रगड़ रहे थे। एक बड़ा-सा सफेद मुर्गा दीवार पर खड़ा सिर उठाए बांग दे



रहा था। हवा चलने से झोंपड़ी के छप्पर पर छाई कटू की बेल से ओस की बूंदें झर रही थीं। ओबरी से लटकते मकई के भुटे सूर्य की सुनहरी किरणों में झिलमिला रहे थे।

एक खाली टोकरी कुंए में लटकाने के बाद छ्यूलान ने माथे से पसीना पोंछा और बुदबुदाई, “तीस साल बीत गए। अब तो वह बूढ़ा लगने लगा होगा।”

स्वोछंग ने भी मानो प्रतिध्वनि की, “वह तो कुत्ते के वर्ष में पैदा हुआ था। अब तो वह इकहत्तर साल का हो गया होगा।”

“मैं तो शायद उसे देखने पर पहचान भी न सकूँ।”

“क्या उसने जापान में फिर से शादी कर ली थी?”

“मैंने जो सुना है उससे तो ऐसा नहीं लगता।”

“वहां की आराम-भरी जिन्दगी छोड़कर वह यहां वापस क्यों चला आया है? अपनी जमीन-जायदाद वापस लेने? सेक्रेटरी चांग ने तो कहा था कि वह सिर्फ घूमने आया है। क्या तुम्हें इस बात का विश्वास होता है?”

“अपना देश छोड़ना बहुत मुश्किल होता है। जब वह यहां से जा रहा था तो हमारे कुछ पड़ोसियों ने उसे रोते देखा था। बेचारा...”

स्वोछंग रोष से बोल उठा, “जब उसने हम पर कभी दया नहीं दिखाई तो अब तुम्हें उस पर दया क्यों आ रही है?”

“वे सब तो अब बीती बातें हैं। जो बीत गया उसे भुला देना ही अच्छा है।”

कुंए के नीचे से काम की प्रगति के बारे में आवाजें आ रही थीं, “हम नम मिट्टी तक जा पहुंचे हैं!”, “अब हमें पानी की पतली-सी धार दिखाई दे रही है।” आदि-आदि।

तीन दिन के कठोर परिश्रम से कुंआ तीस फुट नीचे तक खुद चुका था। नौ बजे एक कार का इंजन घरघराता सुनाई दिया। स्वोछंग

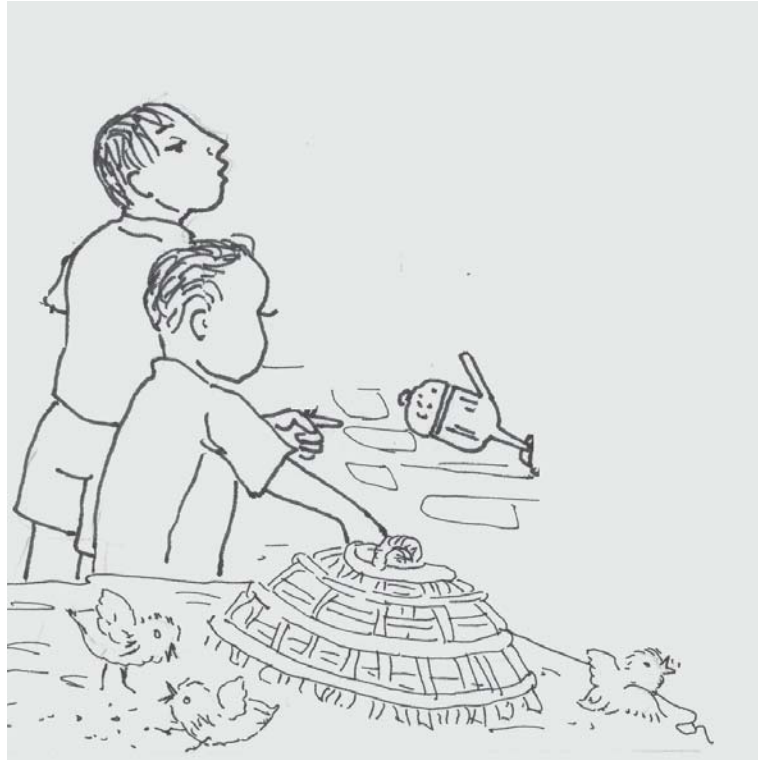


ने घबराकर कहा, “लो वह आ गया।”

छ्यूलान ने क्षण भर कुछ सोचा, फिर बोली, “शिनह्वाए के पप्पा, तुम जाकर साफ कपड़े बदल लो। बिस्तर के गद्दे के नीचे रखे हैं।”

उसके चले जाने पर उसने अपने बेटे से कहा, “अपनी साइकिल ले जाकर पूर्वी गांव से थोड़ा बिना चर्बी वाला गोشت खरीद ला। मुझे उसके लिए कुछ गोشت-भरे समोसे बनाने पड़ेंगे। वे उसे बहुत पसंद हैं।”

शिनह्वाए के जाने के बाद उसने खिड़की की मुंडेर पर रखा सिगरेट का पैकेट उठाया और उसे कुंए में फेंकते हुए नीचे बैठे संगतराश से कहा, “माफ करना, मेरे घर एक मेहमान आ रहे हैं। पानी



दिखे तो मुझे बुलवा लेना।” यह सारा प्रबंध करने के बाद उसने अपने कपड़ों से धूल झाड़ी और द्वार पर जा पहुंची।

एक थरथराता, नाटा बूढ़ा अंदर घुसा। उसके पीछे बच्चों की भीड़ थी। क्या यही वह उद्धत, अक्खड़ ल्यू था? उसका सिर गंजा था जिस पर कहीं-कहीं सफेद बाल उग रहे थे। उसकी भौंहें प्रायः उड़ चुकी थीं। उसके झुर्री-भरे मुरझाए चेहरे पर उम्र के निशान साफ दिख रहे थे। उसकी टांगें कमजोर थीं और चलने में उसे छड़ी का सहारा लेना पड़ रहा था। उसकी कमर झुक गई थी। उसका बायां हाथ अब भी एक गुड़गुड़ी थामे था, जिससे धुएं की लकीर उठ रही थी।



गुड़गुड़ी देखते हुए छ्यूलान सिहर उठी।

ल्यू काले दरवाजे के पास पहुंचकर कुछ रुका और पास खड़ी औरत को मिचमिचाती आंखों से देखने लग गया। एक भौंडी-सी मुस्कराहट लिए उसने उसे देखा और बिना पहचाने ही सिर हिलाया। अचानक उसके हाथ कांपे और गुड़गुड़ी जमीन पर छूट गिरी। सामने खड़ी औरत के माथे पर घाव का निशान देखते ही उसने पीड़ा से अपनी बुझी आंखें मूंद लीं।

छ्यूलान के ओंठ कांप रहे थे। उसने चौखट को इतना कस-कर थाम रखा था कि उसके नाखून लकड़ी में धंसे जा रहे थे।

दोनों में से कोई भी कुछ नहीं बोल सका।

एक बच्चा चिल्ला रहा था, “देखो, देखो बुढ़े की गुड़गुड़ी गिर गई।” अन्य बच्चे ठठाकर हंस रहे थे।

छयूलान की भावनाओं का अन्तर्द्वन्द्व उसे झकझोर रहा था। उसने बच्चों को वहां से भगाया। वे वहां से हटकर कुछ दूर जाकर फिर से देखने लग गए। फिर वह आगे बढ़ी और गुड़गुड़ी उठाई। यह अभी भी वही गुड़गुड़ी थी। केवल उसके तांबे पर कुछ निशान और बढ़ गए थे। इतने वर्षों बाद ल्यू में भी कुछ न कुछ परिवर्तन अवश्य आया होगा।

ल्यू ने अपना थरथराता हाथ आगे बढ़ाया। “अगर मैं भूल नहीं रहा तो तुम छयूलान ही हो न? तुम्हें और अपने मूल गांव को फिर देखकर मैं बहुत प्रसन्न हूँ...”

गुड़गुड़ी के नलके पर लगी धूल पोंछकर उसे वापस देते समय छयूलान की आंखें भर आईं। “कृपया अंदर चलिए। स्वोछंग आपके लिए अच्छी तम्बाकू लेने गया है।”

“कैसा है स्वोछंग?” ल्यू ने अपने दोनों हाथ आगे बढ़ाकर पाइप लिया।

“अच्छा है। सब पार्टी की मेहरबानी है।”

फिर मुड़कर आवाज दी, “शिनह्वाए के पप्पा, हमारे यहां मेहमान आए हैं।”

जैकेट के बटन लगाता हुआ स्वोछंग दौड़ता बाहर आया। लेकिन, ल्यू को देखते ही वह रुक गया और आश्चर्य के मारे अवाक रह गया।

भावुकता से ल्यू ने सिर हिलाया। “तुम भी बूढ़े हो गए।”

काफी देर बाद स्वोछंग ने कहा, “मैं मुर्गे के वर्ष में पैदा हुआ था। अब साठ साल का हो गया हूँ।”

छयूलान हंस पड़ी।

तनाव खत्म हो चुका था। उन्होंने आंगन में प्रवेश किया। जब

छयूलान ने उसे कुंए के बारे में बताया तो ल्यू ने अनुमोदन में गर्दन हिलाई। “यहां जमीन के नीचे बहुत अच्छा पानी है। यह मकान बनवाते वक्त मैंने भी कुंआ खुदवाना चाहा था, लेकिन अपना विचार इस डर से बदल दिया कि कहीं कुंए के कारण मेरे परिवार पर कोई विपत्ति न आ जाए।” वह अपने पुराने अंधविश्वास पर हंस रहा था।

कुंए के नीचे से आवाज आई, “पानी मिल गया... पानी।”

छयूलान ने उत्साह में भरकर ताली बजाई और उस ओर दौड़ पड़ी। कुंए के अंदर झांकते हुए उसने पूछा, “क्या बहुत-सा पानी है?”

“हां, एक छोटे से छेद से उफन-उफनकर निकल रहा है।”

छयूलान ने मुड़कर अपने पति से कहा, “शिनहवाए के पप्पा, एक कड़छी ले आओ।”

स्वोछंग ने एक सूखी लौकी की बनी कड़छी टोकरी में रख दी और टोकरी को कुंए में लटका दिया। जब टोकरी ऊपर आई तो कड़छी में पानी भरा हुआ था।

“शिनहवाए की मम्मी, जरा देखो तो कि पानी खारा है कि मीठा।”

छयूलान ने कड़छी ल्यू की ओर बढ़ा दी- “कृपया अपने गांव का यह पानी चखकर तो देखिए।”

ल्यू भाव-विभोर हो उठा था, किन्तु उसे कड़छी थामने का साहस नहीं हो रहा था।

“चखिए, चखिए,” छयूलान ने उससे आग्रह किया, “हमें बाद में पीने को बहुत मिल जाएगा।”

“पीजिए, आप हमारे मेहमान हैं,” स्वोछंग ने पत्नी के स्वर में स्वर मिलाया।

ल्यू ने कांपते हाथों से कड़छी ली, और पानी में मिली मिट्टी के कड़छी के तले में बैठने की प्रतीक्षा किए बगैर ही बड़े-बड़े घूंट भरने

लगा। अधखुली आंखों से वह पानी का स्वाद ले रहा था।

“मीठा है?” स्वोछंग ने पूछा।

ल्यू ने कड़छी मुंह से लगाकर कुछ और घूंट भरे। उसके गालों पर आंसू बह रहे थे।

आंखों में आंसू भरे छ्यूलान जल्दी से पलटकर दूसरी ओर देखने लगी।□

चांग लिन : एक परिचय

चांग लिन का जन्म ल्याओलिंग प्रांत की फाखू काउंटी में 1939 में हुआ था। 1959 में उच्च माध्यमिक विद्यालय से उत्तीर्ण होने के बाद उन्होंने रेलवे में ट्रेन परिचारक और फिर भोजनयान के प्रमुख का काम किया। बाद में चांग छीछीहार रेलवे में यात्री ट्रेनों के ट्रेन परिचारकों के प्रधान बने।

उन्होंने 1977 में लिखना आरंभ किया। 1978 में उनका लघु उपन्यास *अग्निपुष्प* प्रकाशित हुआ। 1980 में उनकी *बर्फ*, *अकेला हंस* आदि कहानियां प्रकाशित हुईं।

क्या आप कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य हैं?

चांग लिन

1

उत्तर रेलवे ब्यूरो के निदेशक ल्यू ताशान दो वर्षों के बाद साठ के हो जाएंगे और फिर बूढ़ों की श्रेणी में आ जाएंगे। उनके अनुसार, उनका विगत जीवन अनगिनत उतार-चढ़ावों और जटिलताओं से भरा था। पर साथ ही वे यह भी महसूस करते थे कि कुल मिलाकर उन्होंने साधारण जीवन ही जिया। बचपन में जब वह अपनी छोटी बंदूक के बराबर भी लंबे नहीं थे, तभी तगड़े और मजबूत जवानों के दल के साथ उन्होंने जापानी आक्रमणकारियों के खिलाफ गुरिल्ला लड़ाई में हिस्सा लिया। उस युद्ध के समाप्त होते ही उन्होंने स्वयं को क्वोमिन्तांग प्रतिक्रियावादियों के खिलाफ लड़ते पाया। एक बरसात की रात जब ल्याओशी-शनयांग युद्ध आरंभ होने वाला था और सेना दक्षिण की ओर कूच करने की तैयारी कर रही थी, रेजीमेंट कमांडर ने ल्यू को मुख्य कार्यालय बुलाया और डिवीजन कमांडर के साथ क्वोमिन्तांग के हाथ से लेकर रेलवे का प्रबंध करने का आदेश दिया। साथ ही यह भी बताया कि अब से वह रेलवे से संबंधित काम करेंगे। इस आदेश को सुनते ही उनकी आंखें भर आईं। अभी भी उनके हाथों में एक राइफल

थी। पूरी रात वह रोते रहे और उनकी आंखों की झड़ी बाहर की बारिश से तेज थी। उन्होंने जिद्द की कि वह भी रेजीमेंट के साथ दक्षिण जाना चाहते हैं। उनके आंसुओं को देखकर सहयोद्धाओं से न रहा गया, वे उनकी तरफ से रेजीमेंट कमांडर से अपील करने गए। पर उन्हें फटकार पड़ी और वे खामोश लौट आए।

अगले दिन सुबह डिवीजनल कमांडर उनके बैरक में आए। कमरे में प्रवेश करने के साथ उन्होंने पूछा, “ल्यू ताशान किसका नाम है?”

ल्यू चिढ़े हुए खड़े हो गए। डिवीजनल कमांडर ओवरकोट के अंदर कंधे को झटककर उनकी तरफ बढ़े। उन्होंने अपनी काली व चौड़ी भौंहें चढ़ाई और चिल्लाकर बोले, “नई दुल्हन की तरह रो रहे हो? क्या तुम कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य हो?” इतना कहकर वह चले गए।

ल्यू ताशान अवाक रह गए। उनके कानों में डिवीजनल कमांडर की आवाज गूंज रही थी। अंततः चुपके से उन्होंने अपनी राइफल को चूमा और दूसरे सैनिक को दे दिया। सेना के दक्षिण कूच करने के बाद वह रेलवे का काम देखने के लिए डिवीजनल कमांडर के साथ वहीं रह गए। धीरे-धीरे उन्हें लोहे की रेल से प्रेम हो गया। वह बर्फ की तरह रेल पटरियों की गर्मी महसूस करने लगे और उनकी धड़कन सुनने लगे। भूतपूर्व डिवीजनल कमांडर और रेलवे प्रभारी निदेशक को गुजरे तो वर्षों हो गए, पर ल्यू ताशान के दिल में उस बूढ़े क्रोधी आदमी की याद ताजा बनी रही।

ल्यू ताशान का जन्म शानतुंग प्रांत के च्याओतुंग इलाके में हुआ था। उनके पिता किसान थे और उनके दादा तथा पूर्वज भी किसान ही रहे थे। लंबी नाक, चौड़ा मुंह और मोटे खड़े काले बाल वाले ल्यू ताशान देखने में शानतुंग प्रांत की लम्बी-तगड़ी कद-काठी के थे। एक समय वह अपने बाल अधिक स्टाइल में रखना चाहते थे, पर उनके बाल अत्यंत कड़े थे और उन्हें दबाकर नहीं झाड़ा जा सकता था। इसलिए उन्हें सेना छाप बाल की कटाई से संतोष करना पड़ा और

अपने बालों को जूता साफ करने वाले ब्रश की तरह खड़े रखना पड़ा। हालांकि खड़े बाल उनके दृढ़ चरित्र को समुचित रूप से व्यक्त करते थे। वे पूर्णतः दृढ़प्रतिज्ञ थे। उन्होंने अपने सिद्धांतों को कभी नहीं छोड़ा। 'सांस्कृतिक क्रांति' के दस वर्षों के दौरान राजनीतिक अवसरवादियों के आगे झुकने से उन्होंने इंकार कर दिया था और उन्हें अपनी हठधर्मिता की सजा भुगतनी पड़ी थी। उस दुःस्वप्न के समाप्त होने और पार्टी की नई नीति लागू होने के बाद उन्हें एक ऊंचा पद दिया गया, जहां अधिक काम न था। उन्हें यह अच्छा नहीं लगा था और वह कहा करते थे कि यह काम तो मेरे पूर्वजों की कब्र खोदने से भी अधिक बुरा है। हाल ही में उन्हें फिर रेलवे ब्यूरो के निदेशक पद पर नियुक्त किया गया था।

रेलवे ब्यूरो के सभी सचिव नए होने के बावजूद चालाक और दुनियादार थे। पर वे ल्यू ताशान के बारे में अधिक नहीं जानते थे।



उन्होंने यही सुन रखा था कि उन्हें गाली देने की आदत है। वह क्रोधित होने पर गाली देते थे और खुश होने पर भी गाली देते थे। हां, दोनों गालियों में स्वर की भिन्नता होती थी। उनके आने के पहले सचिवों ने कार्यालय में सब कुछ पुनर्व्यवस्थित किया। एक डबल बेड जितनी चौड़ी मेज थी, जिसके पांच बाघ के पैरों की तरह थे। मेज पर तीन टेलीफोन थे। दीवारों को हल्के पीले रंग से रंगा गया, जो वैज्ञानिक रूप से उत्साह और हार्दिकता का रंग है और यह उम्मीद की गई कि चिड़चिड़े निदेशक के लिए सौहार्दपूर्ण वातावरण बनाने में वह सहायक होगा। आने के बाद इस 'हार्दिक घोंसले' में वह केवल एक दिन रुके। अगले दिन सुबह उन्होंने सचिव चओ फंग को बुलाया और कहा, "हमें बाहर चलना है। हम रेलवे स्टेशन के पास वाले कमरे का उपयोग करेंगे।"

सभी सचिव फिर से पूरी सुबह व्यस्त रहे। कार्यालय बदलने का कार्य अंततः पूरा हुआ और वे पूर्णतः निढाल थे। नए कार्यालय का कमरा छोटा था, लेकिन यहां से स्टेशन पर नजर रखी जा सकती थी। कमरे की खिड़की बड़ी टीवी के पर्दे जैसी थी, जिससे स्टेशन पर होने वाली सभी गतिविधियां साफ-साफ देखी जा सकती थीं। प्रेषणकर्मियों का स्वर, कुलियों का शोर, निरीक्षकों की डांट और इन सबसे ऊपर इंजन की सीटी की आवाज। ये सभी आवाजें मिलकर वातावरण को प्रभावित करती थीं। अब निदेशक ल्यू ताशान सुविधा और आराम महसूस कर रहे थे, जैसे उन्होंने कोई अच्छी शराब पी ली हो या कोई सुरीला संगीत सुन रहे हों। खिड़की के सामने कुर्सी पर बैठकर मुस्कराहट के साथ उन्होंने कहा, "हूं! ऐसी ही व्यवस्था होनी चाहिए!"

सचिवों के लिए नए निदेशक के बारे में विस्तार से जानने में कोई कठिनाई नहीं थी। थोड़े ही समय में उन्हें निदेशक के पिछले जीवन की कुछ विशेष जानकारी मिल गई, जिनमें से दो घटनाएं अधिक महत्वपूर्ण थीं।

पहली घटना : 1965 की कड़ाके की सर्दी में रेलवे लाइनों पर

बर्फ जम गई थी और सारे सचिव ठीक से काम नहीं कर रहे थे। ढलान पर चढ़ते समय रेलगाड़ियों का चक्का जाम हो जाता था। इस भीषण मौसम में एक दुर्घटना हो गई, पर उस समय लुगंहो शाखा ब्यूरो के निदेशक अपने कार्यालय में नहीं थे। वह घर पर गहरी नींद में सोए हुए थे। जब ल्यू को यह जानकारी मिली तो वह आग बबूला हो उठे। उस शाम छह बजे शिफ्ट बदलने के समय उन्होंने शाखा ब्यूरो के निदेशक को फोन किया। शाखा निदेशक के जवाब देने के साथ ही ल्यू ने अपना गला साफ किया और गुस्से में गालियां देनी शुरू कर दीं, “धक्कार है आपको! हमारे आदमी वहां हवा और बर्फ में दिन-रात एक किए हुए हैं, पर आप अपनी शिफ्ट समाप्त होने के साथ ही घर भागते हैं और दो घूंट बदबूदार शराब पीकर बीवी की रजाई में घुस जाते हैं” क्या आप पार्टी के सदस्य भी हैं? अब से सभी शाखा के ब्यूरो के निदेशक रात की ड्यूटी करेंगे। मैं हर रोज रात में बारह बजे आप लोगों की हाजिरी लूंगा। अगर आप थक जाएं तो रेलवे लाइन की बगल में सो जाएं! किसी को घर लौटने की इजाजत नहीं दी जाएगी।”

इस तरह सभी शाखा ब्यूरो के निदेशकों ने अपने कार्य को तत्परता से पूरा किया; कोई अन्य दुर्घटना नहीं हुई और सब कुछ सामान्य रहा।

दूसरी घटना : 1964 में अनेक मजदूरों ने शिकायत की कि रेलवे ब्यूरो का अस्पताल बुरी हालत में है। चिकित्सा सेवा बहुत खराब है और अस्पताल के कर्मचारी रोगियों की परवाह नहीं करते। गलत निदान के कारण दो रोगियों की मृत्यु हो गई। एक डॉक्टर ने तो बिना ठीक से आला लगाए एक रोगी की जांच की। जब ल्यू को इन बातों की जानकारी मिली तो उन्होंने गाली नहीं दी, बल्कि वे अपने होंठ भींचकर रह गए। कुछ दिनों के बाद एक गहरी रात को उन्होंने अपने दफ्तर में अचानक कहा कि उनके पेट में दर्द हो रहा है। उन्होंने अपनी कार नहीं निकाली और न ही अस्पताल जाने के लिए किसी को साथ लिया। वह स्वयं ही धीरे-धीरे चलकर इमरजेंसी वार्ड तक



गए। वहां का डॉक्टर चैन की नींद सो रहा था, उसके मुंह से लार निकल रही थी। ल्यू ने उसे जगाने के लिए आवाज दी। डॉक्टर ने अपनी नींद से भारी पलकें खोलीं और फिर उन्हें बंद करके बीमारी के बारे में पूछा। डॉक्टर ने ल्यू को बिस्तर पर लेटने के लिए कहा और जम्हाई लेते हुए अधीरता के साथ पेट की जांच की तथा बताया कि रोगी को एपेण्डीसाइटिस है और इमरजेंसी ऑपरेशन की जरूरत है। ल्यू बिस्तरे से उछल पड़े और घूरते हुए डॉक्टर को डांटने लगे, “धिक्कार है तुम्हें और तुम्हारी एपेण्डीसाइटिस को! तुम कैसे डॉक्टर हो? तुम तो इस सफेद कोट के लिए कलंक हो!”

डॉक्टर की नींद तुरंत काफूर हो गई। उसने घबराकर इस असामान्य रोगी को देखा, “तुम?...”

“हां, मैं ल्यू ताशान हूं। डॉक्टर, आज मैं विशेषकर यही देखने आया था!”

डॉक्टर का चेहरा पीला पड़ गया और उसकी गर्दन झुक गई।



ल्यू बिस्तरे से नीचे उतरे और कमीज के बटन लगाते हुए बोले, “जाओ और अपने प्रबंधक को फोन करो, उन्हें यहां आने के लिए कहो।”

थोड़ी देर में प्रबंधक अपनी कार से वहां पहुंचे। उन्हें नहीं मालूम था कि क्या हुआ है, क्योंकि डॉक्टर अपनी घबराहट के कारण प्रबंधक को साफ-साफ कुछ भी नहीं बता सका था। जब वह दरवाजा खोलकर कमरे में घुसे तो उन्होंने अपने सामने गुस्से में खड़े रेलवे ब्यूरो के निदेशक को पाया।

ल्यू ने मुलायम स्वर में उनसे पूछा, “क्या आप कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य हैं?”

प्रबंधक ने सहमति में सिर हिलाया। वह नहीं जानते थे कि ल्यू ने ऐसा सवाल क्यों पूछा। ल्यू का गुस्सा और बढ़ गया, पर उन्होंने ठंडे स्वर में कहा, “तुम स्वयं को कम्युनिस्ट पार्टी का सदस्य कहते हो, पर मुझे तो तुम क्वोमिनतांग के सदस्य लगते हो।...”

ऊपर की घटनाओं के विवरण में कुछ बातें सही नहीं भी हो सकती हैं। रेलवे मजदूरों के बीच प्रचलित इस कहानी के कहने-सुनने में कुछ मिर्च-मसाला जोड़ देना असंभव नहीं है। यह भी सबको मालूम था कि ल्यू को अधिकारियों ने फटकारा है कि उनकी सख्ती और गाली देने की आदत गुरिल्ला जीवन की देन है। ल्यू ने अपनी आलोचना स्वीकार की और इन अवांछनीय आदतों से स्वयं को मुक्त करने का विश्वास दिलाया। पर अभी एक सप्ताह भी नहीं बीता था कि उन्हें गाली देते और ताना मारते हुए सुना गया। वस्तुतः उन्हें ऐसा लगता था कि ऐसी भाषा का प्रयोग कर अपनी बात अधिक प्रभावशाली ढंग से कह सकते हैं, ठीक वैसे ही जैसे कुछ लेखकों को विस्मयादिबोधक चिन्ह का प्रयोग अत्यंत प्रिय होता है। ‘सांस्कृतिक क्रांति’ आरंभ होने पर वह उन कुछ पहले व्यक्तियों में थे, जिनके गले में लोकनिंदा का पात्र होने के कारण बड़ा बोर्ड लटकाया गया था। उनके अपराधों की सूची लंबी थी। कम्युनिस्ट पार्टी के किसी भी

सदस्य को उनका यह कहना कि तुम्हारा व्यवहार क्वोमिनतांग सदस्य की तरह है, उनके नारकीय जीवन के लिए पर्याप्त था। जब इस अपराध के लिए उनकी खुली आलोचना की जा रही थी तो अस्पताल के प्रबंधक मंच पर आए और यह सिद्ध करने की कोशिश की कि उन्होंने यह टिप्पणी पार्टी के अपमान के उद्देश्य से नहीं की थी और अस्पताल की आलोचना जायज थी। पर उनके बचाव में पेश की गई दलील के नतीजे के रूप में अस्पताल के प्रबंधक को 'राजतंत्रवादी' ठहराया गया और उनके गले में भी वही बड़ा बोर्ड लटका दिया गया। ल्यू ताशान को प्रबंधक की ईमानदारी पर पूरा विश्वास था। उन्होंने तथाकथित क्रांतिकारियों से चिल्लाकर कहा, "यह क्या बकवास है! धिक्कार है तुम लोगों को!" इसके बाद क्या हुआ होगा, इसकी सहज कल्पना की जा सकती है।

यह सब पुरानी बातें थीं। ल्यू ताशान पौराणिक कथाओं के नायक के रूप में मशहूर हुए और रेलवे ब्यूरो में उनसे संबंधित अनेक किस्से प्रसिद्ध थे।

2

ल्यू ताशान की एक और आदत थी। वह प्रतिदिन ब्यूरो के विभिन्न विभागों और दफ्तरों में अचानक जाते थे और कर्मचारियों व मजदूरों के कार्यों की जांच करते थे। उनका मानना था कि रेलवे देश की प्रमुख धमनी है, इसलिए उसे अच्छी तरह काम करना चाहिए। साथ ही उसकी देखभाल करने वाले ब्यूरो का काम भी सही ढंग से होना चाहिए। ब्यूरो को अपने कर्तव्यों को पूरा करने में किसी प्रकार की कोताही नहीं करनी चाहिए।

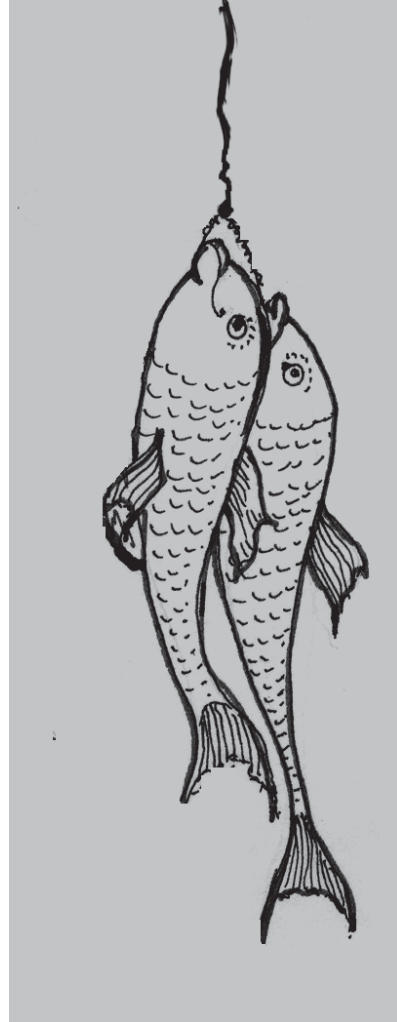
एक दिन दोपहर को परिवहन और वित्त विभाग की जांच करने के बाद ल्यू ताशान टाइपिंग कक्ष में आए। वह यहां हमेशा नहीं आते थे। कमरे में घुसने पर उन्होंने देखा कि एक चालीस वर्षीया टाइपिस्ट हल्के नीले रंग का बेल-बूटेदार ऊनी कोट पहनने में लगी है। पहनकर काफी देर तक ऊपर-नीचे व आगे-पीछे से स्वयं को निहारने के बाद

उसकी आंखों में चमक आई। लगभग बीस वर्षीय दूसरी लड़की ने प्रशंसा में ताली बजाई। ल्यू को यह सब बहुत बुरा लगा, पर उन्होंने डांटा-फटकारा नहीं, क्योंकि वह जानते थे कि यदि उन्होंने कुछ कहा तो वे दुखी हो जाएंगी। महिलाओं के सामने वह हमेशा स्वयं पर नियंत्रण रखने की कोशिश करते थे। उनकी यह कहने की इच्छा हो रही थी, “यदि आपको पहनकर देखना ही है तो कृपया यह काम घर पर किया करें। दफ्तर ऐसे क्रिया-कलापों के लिए नहीं होता।” इसके साथ ही उन्होंने सोचा कि वह अपना स्वर धीमा रखेंगे। पर उनके कुछ बोलने के पहले दोनों टाइपिस्टों ने उन्हें देख लिया। छोटी की जीभ तो तालु से सट गई। दोनों जल्दी से अपनी कुर्सी पर बैठीं और काम करने में इस तरह तल्लीन हो गईं कि जैसे कुछ हुआ ही न हो। बगैर कुछ बोले ही ल्यू कमरे से बाहर निकले। उन्होंने मन ही मन सोचा, “हूँ, इस उम्र की औरत अभी भी हल्के नीले रंग का ऐसा कोट पहन रही है, जिस पर हल्के पीले रंग के फूलों की कढ़ाई है। क्या यह सचमुच उचित है?” लोग कहते हैं कि वह अविवाहित है, अपनी जवानी के दिनों में उसने अपने लिए एक सुंदर और चुस्त-दुरुस्त युवक को खोजने की कोशिश की थी। पर ऐसा युवक केवल उसके सपनों में ही आता रहा, वास्तविक दुनिया में उसे अपने सपने का ऐसा युवक नहीं मिला, क्योंकि ईश्वर ने उसकी सृष्टि ही नहीं की थी। अब चूंकि उसकी उम्र चालीस से अधिक हो गई थी, इसलिए उसने महसूस किया कि उसे जीवन साथी की तलाश में इतनी मीन-मेख नहीं निकालनी चाहिए। अब बस एक ही इच्छा थी कि उसका पति सरकारी कार्यकर्ता हो, भले ही थोड़ी अधिक उम्र का क्यों न हो।

यही सब कुछ सोचते हुए ल्यू ताशान सचिव के दफ्तर में गए। पर वहां भी कोई नहीं था। उन्हें किसी ने बताया कि परिवहन विभाग ने कहीं से ताजा मछली की व्यवस्था की है और स्टाफ अपने हिस्से की मछली लेने गया है। ल्यू को तेज गुस्सा आया। उन्होंने सोचा, “कितने गैरजिम्मेदार हैं। मछली की गंध लगते ही काम छोड़कर चले गए। मैं यहीं बैठकर देखता हूँ कि वे कब लौटते हैं!” वह एक कुर्सी

पर बैठ गए और मेज पर रखे मोटे शीशे के नीचे रखी तस्वीर देखने लगे। एक सुंदर लड़की की तस्वीर थी, वह बैले नर्तकी लग रही थी। शायद किसी सचित्र पत्रिका से उसकी तस्वीर काटी गई थी। फिर उन्हें मेज पर अपने नाम लिखा एक पत्र दिखाई पड़ा। उन्होंने तुरंत खोलकर पढ़ा। फिर तो उनके गुस्से का ठिकाना न रहा।

पत्र पढ़ते हुए वह गुस्से में चिल्लाए, “धिक्कार है!” इस पत्र में पिछले महीने पाएथा रेलवे स्टेशन पर हुई दो ट्रेनों की टक्कर की विस्तृत जानकारी दी गई थी। इस पत्र ने पर्दाफाश किया कि कैसे पाएथा रेलवे स्टेशन और पेइछांग शाखा ब्यूरो ने मिलकर अपनी रिपोर्ट में एक बड़ी दुर्घटना को छोटी दुर्घटना बताकर अधिकारियों की आंखों में धूल झाँकने की कोशिश की थी। ल्यू ने इस दुर्घटना पर विचार किया था और यह मान लिया था कि यह साधारण दुर्घटना है। पर इस पत्र के अनुसार यह सचमुच एक बड़ी दुर्घटना थी। उन्होंने मेज पर जोर से मुक्का मारा। मेज पर रखी दवातें उछल पड़ीं। उन्होंने चिल्लाकर कहा, “धिक्कार है! तुम लोगों ने मेरे साथ गंदा खेल खेला। मुझे पूरी तरह से धोखे में रखा। अगर इस पत्र



की बातें सच्ची हैं तो मैं भी दिखाता हूँ।” फिर अचानक उन्होंने सोचा कि कहीं झूठा दोषारोपण तो नहीं किया गया था। आखिर ‘सांस्कृतिक क्रांति’ के समय झूठा दोषारोपण तो सामान्य बात हो गई थी। उन्होंने फिर से पत्र को पढ़कर देखा कि नीचे किसी के हस्ताक्षर हैं या नहीं। यदि हस्ताक्षर और पता है तो पत्र की अस्सी या नब्बे फीसदी बातें सही होंगी।

पत्र हस्ताक्षरित था : ल्वी च्यूछाए, पाएथा रेलवे स्टेशन का एक पैटमैन। अपने होंठों पर जीभ फेरते हुए उन्होंने पत्र लिखनेवाले की प्रशंसा की, “हां, इसमें अपना नाम और पता लिखने का साहस है। यह सच्चा आदमी है!”

बरामदे से ऊंची एंडियों के जूते की ठकठक की आवाज आई, जैसे कोई शोख लड़की चली आ रही हो। थोड़ी देर में मजबूत धागों से नथी मछलियां लटकाए सचिव चओ फंग ने मुस्कराते हुए कमरे में प्रवेश किया; एक मछली अभी भी छटपटा रही थी। चओ फंग ने उन मछलियों में से दो अच्छी व बड़ी मछलियां छांटकर सामने रखीं और कहा, “निदेशक ल्यू, ये आपके लिए हैं।”

ल्यू ताशान ने सचिव चओ को घूरते हुए पूछा, “कहां से मारकर ला रहे हैं इतनी अच्छी मछलियां?”

चओ फंग ने कोई जवाब नहीं दिया, बस झंपते हुए मुस्कराते रहे। निदेशक ल्यू का चेहरा तना हुआ था और गुस्से के कारण उनकी ठोड़ी कांप रही थी। “मैंने भी एक बहुत बड़ी मछली पकड़ी है और साथ में कुछ छोटी मछलियां भी...” उन्होंने पत्र दिखाते हुए चओ फंग से कहा। चओ फंग की तो बस यह हालत थी कि काटो तो खून नहीं; उनके हाथ से मछलियां गिरती-गिरती बचीं।

“यह पत्र कब आया?” ल्यू ने पूछा।

“...”

“सच-सच बताएं!”



चओ फंग ने ल्यू की तरफ देखा और सोचा कि अब झूठ बोलने का कोई फायदा नहीं होगा। इसलिए उन्होंने कहा, “तीन दिन पहले।”

“फिर तुरंत मेरे पास क्यों नहीं भेजा?”

“पेइछांग शाखा ब्यूरो के प्रधान पाए फान ने मुझे फोन किया था कि एक मजदूर सारे मामले का बतंगड़ बना रहा है। मैंने सोचा, चूँकि ‘सांस्कृतिक क्रांति’ के दौरान आप पाए फान के साथ दो वर्षों के लिए हिरासत में थे, ऐसे में यह पत्र पाकर आप लज्जित महसूस करेंगे...”

ल्यू ने आंखें मिचमिचाई, “क्या पाए फान को इस पत्र की जानकारी है?”

चओ फंग ने भीगी बिल्ली की नजरों से ल्यू को देखा और हामी भरी, “जी, उन्होंने फोन किया था कि शाखा ब्यूरो को प्रतियोगिता में मिली जीत के लिए जल्दी ही लाल झंडा दिया जाएगा। यदि इस पत्र की बातें अभी जाहिर...”

ल्यू ताशान का रंग बदल गया। वे अपने होंठ भींचते गहरी सांस ले रहे थे। “हूं। यदि कोई आपकी चापलूसी करे और आपको तोहफा दे तो आप सिद्धांतों को ताक पर रख सकते हैं। आप एक आदर्श सचिव हुआ करते हैं! इस घृणित व्यापार में आप कितने दिनों से लगे हुए हैं?”

गुस्से में भरे वह इधर-उधर घूमने लगे। बाहर मालगाड़ी का इंजन सीटी दे रहा था और लट्टों से लदी मालगाड़ी स्टेशन से छूटी। उन्होंने अचानक मुड़कर सचिव से पूछा, “क्या आपने ‘1918 में लेनिन’ फिल्म देखी है? क्रेमलिन की रक्षा करने वाले गाड़ों का कप्तान याद है? वह सिद्धांतों का आदमी था, एक सच्चा कम्युनिस्ट था! पूंजीपतियों ने उसे रुपयों से ढंक देने का प्रलोभन दिया। पर क्या वह बहका? यदि उतने पैसे आपको दिए जाएं तो क्या आप नहीं बहक जाएंगे?” वह इतनी जोर से बोल रहे थे कि उन्हें पता ही नहीं चला कि किसी ने दरवाजा खोलकर झांका और फिर बंद कर दिया। सचिव चुपचाप खड़े

थे, उनके मुंह से एक शब्द नहीं निकला। उन्होंने वह फिल्म देखी थी, पर उन्होंने कभी यह नहीं सोचा था कि यदि सुरक्षा गार्डों के कप्तान होते तो क्या करते? ल्यू कमरे में टहलते रहे। फिर अचानक उन्होंने टेलीफोन का रिसीवर उठाया और बोले, “हैलो, पार्टी स्कूल है न? मैं ल्यू ताशान बोल रहा हूं। मैं एक छात्र को आपके यहां भेजना चाहता हूं।”

उधर भरपूरी आवाज आई, “हमारी कक्षा एक सप्ताह पहले शुरू हो गई है।”



“इससे क्या फर्क पड़ता है। छात्र का नाम चओ फंग है।”

ल्यू ने रिसीवर रखा, आंखें मिचकाई और कहा, “सुनिए, मेरे युवा चतुर साथी, आप कल पार्टी स्कूल जाएंगे। अपने दिमाग में कुछ काम की बातें भरिए। भरेंगे न? ‘1918 में लेनिन’ फिल्म को कुछ मर्तबा देखिए।”

चओ फंग ने सहमति में सिर हिलाया और फिर मछली उठाई। वह अभी कुछ बोलने ही जा रहे थे कि ल्यू ने कहा, “इन मछलियों को वहीं भेज दें, जहां से

आई हैं। मैंने पहले ही बड़ी सफेद मछली पकड़ ली है। (बड़ी मछली से तात्पर्य शाखा ब्यूरो प्रधान से है। पाए फान के पाए रेखाक्षर का अर्थ सफेद होता है)।”

चओ फंग के सफेद चेहरे से पसीना चू रहा था। उन्होंने सोचा, “मैंने भी क्या किया? जब दुनिया में इतने आदमी मौजूद हैं तो भला मुझे उनके खिलाफ खड़े होने की क्या जरूरत थी?”

3

उस दोपहर ल्यू ने एक सभा बुलाई और एक विशेष जांच दल गठित किया, जिसमें अनुशासन निरीक्षण विभाग के प्रधान के अलावा परिवहन विभाग के प्रधान और तकनीकी विभाग के प्रधान को शामिल किया। उन्हें पाएथा रेलवे स्टेशन जाना था। उनके जाने के पहले ल्यू ने उन्हें अपने दफ्तर बुलाया और चेतावनी दी, “आप सभी कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य हैं” ठीक! जब पाएथा रेलवे स्टेशन में होंगे, आप शराब नहीं पिएंगे। कोई भी आपको खाने पर बुलाए, आप इंकार करेंगे। अपना मुंह बंद रखेंगे। अगर आपने किसी की आवश्यकता स्वीकार की तो बाद में उसके विरुद्ध कुछ भी कहने में आपको कठिनाई होगी। यह निश्चित कर लें कि आप घूस नहीं लेंगे। यदि आप शराब पीना चाहते हैं तो आप लोगों के लौटने पर मैं एक भोज दूंगा।”

यात्री ट्रेन न होने के कारण उस दोपहर जांच दल मालगाड़ी से रवाना हुआ। दो दिनों के बाद जांच दल वापस लौटा और सीधे ल्यू के दफ्तर गया। उस समय वह एक मीटिंग में बैठे थे। थोड़ी देर में वह बाहर आए, उनका चेहरा लाल हो रहा था। दरअसल मीटिंग अभी खत्म नहीं हुई थी और शायद किसी विषय पर जोरदार बहस चल रही थी। जांच दल के वापस आने की सूचना पाकर वह बाहर आए थे। जांच दल ने मजदूरों से पूछताछ और विस्तृत रिपोर्ट की। पैटमैन के पत्र की बातें सच्ची थीं। जांच दल ने मजदूरों से पूछताछ और दुर्घटना स्थल पर क्षतिग्रस्त डब्बों की भी जांच की थी। सचमुच बड़ी दुर्घटना थी। जब वे वहां थे तो एक व्यक्ति ने उन्हें खाने पर भी बुलाने की कोशिश

की। वह व्यक्ति कोई और नहीं, स्टेशन मास्टर थे। स्टेशन मास्टर बड़े ही जिंदादिल और बात करने में चतुर व्यक्ति थे। उनकी बातें अन्य कहीं की अपेक्षा अधिक मीठे तुरपान के अंगूरों की तरह ज्यादा मीठी थीं। निस्संदेह, जांच दल ने उनका निमंत्रण स्वीकार नहीं किया था। दुर्घटना की रिपोर्ट उन्होंने ही लिखी थी और शाखा ब्यूरो के प्रधान पाए को फोन करके उन्होंने ही बताया था कि ऐसी रिपोर्ट क्यों लिखी गई है। पाए ने उनकी दलील सुनकर उनकी प्रशंसा में कहा था, “आपका दिमाग बहुत तेज है।”

“धिक्कार है उन्हें! ये लोग हमेशा गड़बड़ घोटाला करते हैं!” ल्यू ने रिपोर्ट सुनने के बाद यही टिप्पणी की। अपने बालों में हाथ फेरते हुए वह अचानक उठ खड़े हुए, “पाएथा स्टेशन से मेरी बात कराएं और ल्वी च्यूछाए को तुरंत यहां बुलाएं। उस स्टेशन मास्टर को, हां उस ‘चालाक गधे’ को तुरंत बरखास्त करें और किसी ईमानदार व्यक्ति को वहां बहाल करें।”

ल्यू के अलावा सभी वहां से चले गए। ल्यू आंखें बंदकर गाड़ियों की सीटी की आवाज सुनते रहे। उन्होंने सोचा, “मैं इस बड़ी सफेद मछली के साथ कैसे पेश आऊं? हां, मुझे हटाकर उसके साथ रेलवे में काम करने के लिए भेजा गया था। गलती न होने के बावजूद हम दोनों को दो वर्षों के लिए कैद में रखा गया था। हमने वहां बेहद बातें कीं। हमने दुनिया की सभी समस्याओं पर विचार किया। हमने कहा कि पृथ्वी गोल है। मैंने कहा कि पृथ्वी पर हर तरह की समस्याएं हैं। क्या ऐसा नहीं था? कुछ सवालों के जवाब हमारे पास थे, पर अधिकांश सवालों के बारे में हम कुछ नहीं जानते थे। जब हम किसी सवाल का जवाब नहीं ढूंढ़ पाते तो हम अत्यंत दुखी होते। धीरे-धीरे हमें शराब पीने की आदत लग गई। हम उस सुकुमार युवक से चोरी-छिपे शराब मंगवाते थे, जो हमारी निगरानी के लिए नियुक्त था। हमें एक बोतल शराब की कीमत एक खान देनी पड़ती थी, इसलिए हमने उसका नाम ‘एक खान की शराब’ रख दिया था। जब भी हमें रात में नींद नहीं आती तो हम प्रायः बोतल से शराब पिया करते थे।

थोड़ी शराब लेने के बाद पेट गरम होने पर हम धैर्य से इधर-उधर की बातें करते थे। कभी-कभी अधिक शराब पीने से पाए का चेहरा समुद्री झींगे की तरह लाल हो जाता था। नशे की हालत में अपनी अधमुंदी आंखों से मुझे देखता हुआ निःश्वास लेकर कहता, “अय, आए, लाओ ल्यू, क्या तुम यहां से निकलने के बाद भी रेलवे की नौकरी करोगे? मेरा तो जी भर गया। मैंने बीस वर्षों तक रेलवे में काम किया और इसका इनाम मुझे क्या मिला, ये जेल की सलाखें?”

ल्यू एक घूंट शराब पीकर होंठों पर जीभ फेरते हुए पाए के नजदीक जाकर फुसफुसाते, “मैं अपनी पत्नी की तरह रेलवे लाइनों को भी नहीं छोड़ सकता” तुम बताओ, लाओ पाए, क्या कभी तुम अपनी पत्नी के बारे में सोचते हो?”

पाए की आंखें लाल हो जातीं और वह जवाब देने के बजाय पूछ बैठते, “क्या तुम याद करते हो?”

“हां, कैसे नहीं करूंगा! कोई अपनी पत्नी के बारे में कैसे नहीं सोचेगा?” तब तक शराब खत्म हो जाती थी और वे दोनों बातें करना बंदकर गहन विचारों में खो जाते थे। थोड़ी देर बाद चूहों की भगदड़ मचती, वे दीवार और फर्श के कोनों में दौड़ लगाते। फिर उनकी चू-चूं सुनाई पड़ती। ल्यू सोचते, “शायद नवजात चूहे चू-चूं कर रहे हैं, वे अपनी मां को खोज रहे होंगे। यही उनकी दुनिया है। पर क्या ऐसा ही हमारी दुनिया में नहीं है? एक इंसानों की दुनिया है और एक चूहों की दुनिया है। अच्छे इंसान भी हैं, बुरे इंसान भी हैं। बुरे इंसानों से अधिक संख्या अच्छे इंसानों की होती है। पर क्या यह अच्छा नहीं होगा कि दुनिया में अच्छे इंसानों की संख्या और अधिक हो?”

नजरबंदी से छूटने के बाद भी वे अक्सर मिलते और साथ बैठकर पीते रहे। सीधे बोतल से पीने की उनकी आदत थी। उन्हें सुंदर कांच के ग्लासों का प्रयोग का अभ्यास नहीं था। हालांकि ग्लास से पीना उचित था, पर इससे मुंह में शराब नहीं भरती थी। बाद में ल्यू की पत्नी ने उन्हें फटकारा कि अमरीकी सिपाही सीधे बोतल से शराब



पीते हैं। इसलिए पीने के वक्त वे पोर्सलिन का सफेद जार रखने लगे। कभी-कभी पी लेने के बाद पाए अपने कपड़े खोलकर तथाकथित क्रांतिकारियों द्वारा की गई पिटाई के जख्मों के निशान दिखाते थे। पर ल्यू ऐसा कभी नहीं करते थे, “क्यों परेशान हों? वे केवल भयानक अतीत की याद दिलाते हैं।” यह कहते हुए उनका चेहरा लाल हो जाता था।

4

इंजन की कर्णभेदी आवाज ने उन्हें वर्तमान में पहुंचा दिया। ल्यू कुर्सी से उठकर खिड़की के पास गए। यह रेलवे स्टेशन प्रमुख रेलवे यातायात और माल परिवहन स्टेशन था। रोजाना सैकड़ों गाड़ियां आती और जाती थीं, पर यहां लगे सभी साज-सामान पुराने थे; ऐसा लगता था जैसे चिंग राजवंश की पोशाक पहने आधुनिक लोग खड़े हों। कुछ इंजन तो जापानी-आक्रमण-विरोधी युद्ध के दिनों के थे। सामने एक वाष्प इंजन खड़ा था, अचानक उससे घना काला धुंआ निकला और खिड़की से दिखाई पड़ रहे आधे आकाश को ढंक लिया।

ल्यू ने स्वयं से कहा, “ओह, ऐसा पिछड़ापन! चीन का पिछड़ापन हम कम्युनिस्टों के लिए शर्म की बात है। लोग खुलेआम झूठ बोलते हैं और कुछ लोग खुश होकर उस झूठ को सुनते हैं और उस पर यकीन करते हैं। जो वास्तव में मिथ्या है, उसे लोग सच समझकर गंभीरता से लेते हैं। धिक्कार है उन्हें! एक शाखा ब्यूरो प्रधान ने अपने सहयोगियों को धोखा दिया और अपने अधिकारियों को मूर्ख बनाया। लोग हमारे बारे में क्या सोचेंगे? पार्टी की प्रतिष्ठा पहले ही से कम है और अगर यही स्थिति चलती रही तो पार्टी की प्रतिष्ठा और कम होगी। लोग हम पर विश्वास करना छोड़ देंगे। यह कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्यों के लिए सबसे अधिक शर्म की बात है! पाए, मैंने तुम्हें आज पकड़ा है और मैं तुम्हें आसानी से नहीं छोड़ूंगा। मैं तुम्हारे साथ सख्ती से पेश आऊंगा और ब्यूरो बुलेटिन में इसकी घोषणा करूंगा।”

उन्होंने रिसीवर उठाया और पाए को फोन किया, “हैलो, मैं पाए फान से बात करना चाहता हूँ।” लाओ पाए? तुम अपनी नौकरी बदल सकते हो! तुम किस नयी नौकरी के चक्कर में हो? जाओ और अभिनेता बन जाओ! तुम हंस रहे हो? तुम कितने अच्छे अभिनेता हो! तुम झूठ को सच बना सकते हो! तुम्हें धिक्कार है! मैंने तो लगभग तुम्हारी बातों पर यकीन कर लिया लिया था! तुमने ये तरकीबें कहाँ से सीखीं? तुमने पाएथा स्टेशन दुर्घटना के बारे में ब्यूरो को झूठी जानकारी दी। कम्युनिस्ट पार्टी का एक सदस्य दूसरे सदस्य को धोखा देता रहा! मैंने पूरे मामले की विस्तृत जांच की है। मैंने सुना है कि तुम ल्वी च्यूछाए को परेशान करना चाहते हो। तुम्हें धिक्कार है! पर मैं उसके साथ हूँ। तुम्हारे बातूनी स्टेशन मास्टर को अवश्य ही बरखास्त किया जाएगा और तुम्हें भी सजा भुगतनी पड़ेगी!” फोन पर पाए तर्क और दलीलें पेश करने के साथ-साथ अनुनय-विनय भी कर रहे थे। ल्यू ने रिसीवर मेज पर पटका, कमरे का एक चक्कर लगाने के बाद उन्होंने फिर से रिसीवर उठा लिया, “लाओ पाए, क्या तुम अभी भी कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य हो? ठीक है, अपने किए का नतीजा भुगतने के लिए तैयार रहो!” इतना कहकर उन्होंने रिसीवर रख दिया।

उस शाम ब्यूरो पार्टी समिति की एक सभा हुई और दुर्घटना की सही जानकारी न देने के लिए पेइछांग शाखा ब्यूरो को दंडित किए जाने के संबंध में फैसला लिया गया। कुछ लोगों ने महसूस किया कि दंड कुछ अधिक व कठोर है, यह एकता और स्थिरता कायम करने की कोशिश को प्रभावित कर सकता है। पर ल्यू निश्चल और अपनी राय पर अडिग रहे। उन्होंने कहा, “दंड और एकता व स्थिरता दो भिन्न मुद्दे हैं, इन पर पृथक् रूप से विचार किया जाना चाहिए; अंत में अनुशासन बनाए रखने के लिए पाए को एक गंभीर चेतावनी दी जानी चाहिए और उनकी फाइल में इसका उल्लेख करना चाहिए।” पाएथा रेलवे स्टेशन के स्टेशन मास्टर और पेइछांग शाखा ब्यूरो के सुरक्षा पर्यवेक्षक कार्यालय के प्रधान को बरखास्त किया गया। इसके अलावा ल्वी च्यूछाए को पचास खान का इनाम देने की बात की गई और साथ ही

यह फैसला भी लिया गया कि अगले बुलेटिन में इन फैसलों को प्रकाशित किया जाएगा।

सभा के बाद ल्यू थकान महसूस कर रहे थे। उनकी पीठ में कुछ दर्द था। वे अपनी पीठ सहलाते हुए अपने दफ्तर लौटे। अभी वे कुर्सी पर बैठे ही थे कि रेलवे मजदूर की युनिफॉर्म पहने एक अपरिचित अंदर आया। उसने अपनी टोपी उतारी, उसके बाल सफेद थे और चेहरे पर झुर्रियां थीं। हाथ में टोपी लिए हुए वह ल्यू की तरफ आया और बोला, “मैं निदेशक ल्यू से मिलना चाहता हूं।”

“मैं ही हूं। आप बैठें।” ल्यू ने सामने की कुर्सी की तरफ इशारा कर कहा। पर बूढ़ा नहीं बैठा।

“मेरा नाम ल्वी च्यूछाए है, मैं पाएथा रेलवे स्टेशन का पैटमैन हूं,” बूढ़े मजदूर ने धीरे-धीरे नर्म आवाज में कहा।

ल्यू धीरे से अपनी कुर्सी से उठे। उन्होंने आदर के साथ धीमी आवाज में पूछा, “क्या आप कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य हैं?”

“हां, मैंने 1950 में पार्टी की सदस्यता ली थी।”

“मैं भी हूं। मैंने 1942 में पार्टी की सदस्यता ली थी।”

दोनों चुप रहे। उन्होंने महसूस किया कि बोलना अनावश्यक है। चुप रहना ही बेहतर है। भाषा की शक्ति सीमित थी, पर भावनाओं की शक्ति असीम थी। दोनों ने एक-दूसरे को गौर से देखा। दोनों अपने सामने के व्यक्ति में कम्युनिस्ट पार्टी के सच्चे सदस्य की छवि देख रहे थे। अचानक ल्यू ने बूढ़े मजदूर को गले लगाया और रुंधे गले से कहा, “कामरेड, आप सचमुच अच्छे हैं।” फिर स्वयं पर काबू कर पूछा, “अभी आपकी उम्र क्या है?”

“उनसठ वर्ष चार महीने।”

“आप मुझसे एक वर्ष बड़े हैं। आप मेरे बड़े भाई हैं। हां, बड़े भाई!” ल्यू ने खुश होकर कहा।

उन्होंने बूढ़े मजदूर के सफेद बालों और चेहरे की झुर्रियों को देखा और उदास होकर बोले, “कितने दुख की बात है! काश, आप दस या कम से कम पांच वर्ष छोटे होते! हमें अनेक जगहों पर आप जैसे ईमानदार व्यक्ति की जरूरत है!”

बूढ़े मजदूर ने अपना सिर हिलाया। वह कांपते होंठों से बोला, “अब मैं छोटा नहीं हो सकता, यह असंभव है। पर युवाओं की मदद करें, जिससे वे यथाशीघ्र परिपक्व हों। यह आप पर निर्भर करता है।”

ल्यू ने सहमति प्रकट की।

बूढ़े मजदूर ने अपनी बात जारी रखी, “मैं अगले वर्ष रिटायर हो जाऊंगा। पिछले बत्तीस वर्षों से रेलवे में काम कर रहा हूं। मुझे मालूम है कि स्विच रूम में कितने पत्थर लगे हैं। मैं काम नहीं...”

ल्यू अशांत थे। वे कम्युनिस्ट पार्टी के इस पुराने सदस्य के प्रति आदर व्यक्त करना चाहते थे। फिर से गले लगाते हुए उन्होंने कहा, “आज रात आप हमारे हॉस्टल में ठहरें और कल वापस जाएं।”

बूढ़े मजदूर का जवाब सुने बिना उन्होंने फोन किया, “हैलो, मैं ल्यू ताशान बोल रहा हूं। आज हमारे एक मेहमान रात में यहां ठहरेंगे। उनके खाने की... क्या? किस श्रेणी के कार्यकर्ता हैं? एक मिनट...”

ल्यू मुस्कराए, रिसीवर के मुंह पर हाथ से ढंककर कनखी मारते हुए ल्वी च्यूछाए से कहा, “वे आपकी श्रेणी पूछ रहे हैं।”

“मैं केवल एक मजदूर हूं,” ल्वी ने कहा।

ल्यू ने फोन पर बताया, “श्रेणी?... वे मेरे अधिकारी हैं।”

6

उस रात दस बजे ल्यू ताशान खाली पेट पैदल घर लौटे। उनकी पत्नी ने उनके लिए पहले से शराब गर्म कर दी थी। थके होने के बावजूद वह खुश दिख रहे थे, अपनी बूढ़ी पत्नी को देखकर वह मुस्कराए।

ल्यू वर्षों पहले गांव की एक लड़की के प्रेमपाश में फंसे थे। उस समय उनकी फौजी यूनिट उस गांव में रुकी थी। पर उनके प्रेम की जानकारी मिलने पर उनके कमांडर ने उन्हें सावधान किया कि हम लोग अभी युद्ध लड़ रहे हैं और यह विवाह करने का उचित समय नहीं है, युद्ध समाप्त होने तक प्रतीक्षा करनी चाहिए। हालांकि ल्यू को वह जगह छोड़नी पड़ी, मगर उनका दिल वहीं रह गया। 1950 में सेना से सेवामुक्त होने के बाद वह एक बार फिर उस गांव में उस लड़की की तलाश में गए। गांव वालों ने उन्हें बताया कि उस लड़की की तो शादी हो गई और वह मां बनने वाली है। यह सुनने के बाद किसी घायल शेर की तरह वह गांव से निकले। आखिरकार, उन्होंने दिल को समझाया और अपने गांव लौट आए। गांव आकर उन्होंने एक लड़की से शादी की, वही अब उनकी पत्नी हैं। उनके प्रथम प्यार की तरह वह सुंदर नहीं थीं, पर सीधी, ईमानदार और दूसरे का ध्यान रखने वाली थीं। धीरे-धीरे ल्यू अपनी पत्नी से प्रेम करने लगे और उन्हें अहसास हुआ कि वह अपनी पत्नी को नहीं छोड़ सकते।

ल्यू ने शराब पी, पत्नी बगल में बैठी थीं। उन्हें आज पति से कुछ कहना था। पर वह इंतजार कर रही थीं। शराब पीने से पति का चेहरा लाल हो गया और आंखें मुस्कराहट से फड़कने लगीं। लगभग आधे घंटे के बाद उनके चेहरे को देखते हुए पत्नी ने कहा, “तुमने फिर से वही किया। वही पुरानी गलती।”

“कौन-सी गलती?” ल्यू ने शराब के प्याले को होंठों से लगाते हुए पूछा।

“कौन-सी गलती? तुम्हारा उग्र स्वभाव। तुमने लाओ पाए को क्यों दंडित किया?”

ल्यू ने पत्नी को घूरकर देखा, अपना प्याला टेबुल पर रखकर जोर से बोले, “औरतों को राजनीति में दखलंदाजी नहीं करनी चाहिए। जब औरतें राजनीति में हस्तक्षेप करती हैं तो स्वाभाविक रूप से सब गड़बड़ कर देती हैं।”

उनकी पत्नी जानती थीं कि पीने के बाद वह अपेक्षाकृत अच्छी मानसिक अवस्था में रहते हैं। उन्होंने समझाया, “‘सांस्कृतिक क्रांति’ से मिला सबक न भूलो...”

ल्यू ने अपनी आवाज ऊंची की और तरन्नुम में बोले, “अगर एक और ‘सांस्कृतिक क्रांति’ हो तो भी हम बुरे लोगों को मनमानी करने की इजाजत नहीं देंगे। मरने के बाद ही मैं हार मानूंगा।”

“नहीं! तुम्हें लाओ पाए की मदद करनी चाहिए और उनको मिले दंड के बारे में कुछ करना चाहिए।”

ल्यू ने अपनी भौहें चढ़ायीं और कठोर स्वर में बोले, “मैं कुछ नहीं करूंगा। पार्टी समिति के सामने उनको दिए जाने वाले दंड का प्रस्ताव मैंने रखा था, मैंने!”

“तो फिर...” उनकी पत्नी भी हार मानने को तैयार न थीं।

ल्यू ने शराब के प्याले को परे रखा। शराब पीने की इच्छा खत्म हो गई थी। “अगर तुमने एक शब्द भी और कहा तो तुम्हें लानत है। मैं तुम्हें तलाक दे दूंगा।”

उनकी पत्नी से बर्दाश्त न हुआ, वह उठकर अंदर कमरे में रोने चली गई। ल्यू थोड़ी देर तक स्थिर बैठे रहे, “चू मुझ पर गुरिल्ला आदत सवार हो गई!” वह भी उठकर अंदर गए और प्यार से पत्नी को सीने से लगाया, “माफ करो, मुझे गुस्सा आ गया। दुनिया की सारी जवान लड़कियों के लिए भी मैं तुमसे अलग नहीं हो सकता! तुम मेरा कीमती खजाना हो।”

उनकी पत्नी ने हड़बड़ाकर दरवाजे की तरफ देखा और खुद को छुड़ाती हुई बोली, “जाने दो। यदि पोती ने देख लिया तो।”

दरवाजे पर हल्की दस्तक सुनाई पड़ी। ल्यू पत्नी के साथ बाहर निकले और उन्होंने दरवाजा खोला। एक युवक सिर झुकाए हुए अंदर घुसा। वह लगभग तीस वर्ष का था। पतले-दुबले छोटे गोरे चेहरे वाले युवक के कंधे से एक बड़ा थैला लटका था।

ल्यू ने पूछा, “किसे खोज रहे हो?”

युवक ने कोई जवाब नहीं दिया। अचानक अपना चेहरा ढंककर वह रोने लगा। ल्यू को बड़ा अजीब-सा लगा। उन्होंने युवक को बैठने के लिए कुर्सी दी और पूछा, “क्या बात है? मुझे बताओ।”

“मैं पाएथा रेलवे स्टेशन का स्टेशन मास्टर था। पर अब नहीं हूँ... मैंने एक गलती की...” वह इस तरह सिसकियां ले रहा था, जैसे उसके मां-बाप अभी-अभी मरे हों।

हालांकि ल्यू अनुभवी व्यक्ति थे, पर इस विचित्र दृश्य ने उन्हें भावुक बना दिया। उन्होंने युवक को आगे-पीछे से एक नजर देखा। अचानक वह उसके आगे रुके, “होश में आओ और शर्म करो! क्या अपनी नौकरी खोने के कारण रो रहे हो? या अपनी गलती का पश्चाताप कर रहे हो? तमाशा मत करो! रोने से क्या तुम्हारा पद तुम्हें वापस मिल जाएगा? यह मत सोचो कि मैं दयालु बुद्ध हूँ।”

युवक थोड़ी देर सिसकियां लेता रहा, फिर चुप हो गया। ल्यू अपनी हंसी नहीं रोक सके। उन्होंने मन ही मन सोचा, “कितना कुशल अभिनेता है! पिछले दस वर्षों में कितने अभिनेताओं को प्रशिक्षित किया गया है।”

युवक ने अपने चेहरे से हाथ हटाया। हालांकि उसकी आंखें लाल दिख रही थीं, पर उनमें आंसू नहीं थे। उसने ल्यू को झटके से देखा और फिर असहमति में अपने होंठ खोले, “निदेशक ल्यू, यदि आप ऐसे ही करते रहे...”

“क्या होगा? कहो, चुप क्यों हो गए?”

युवक ने गहरी सांस ली, जैसे ल्यू के प्रति दुख प्रकट कर रहा हो।

ल्यू हंसने लगे। उन्होंने अपने बालों में हाथ फेरते हुए कहा, “तो तुम्हें लगता है कि तुम्हारे निकाले जाने से आसमान गिरने वाला है! तुम्हारी उम्र अधिक नहीं है, पर तुम चालबाज हो। पहले तुमने झूठ

बोला, जब झूठ नहीं चला तो रोते हुए मेरे पास आए और अब मुझे धमकी दे रहे हो। लानत है तुम पर! क्या तुम पार्टी सदस्य हो?"

युवक ने नजर उठाकर क्रोधित ल्यू की नजरों को देखा। उसने



फिर गर्दन झुका ली।

“जाओ, ईमानदार आदमी बनने की कोशिश करो! मेरे साथ बकवास मत करो। मुझे इससे चिढ़ है!”

युवक ने कुछ और ‘चालें’ चलने की कोशिश की, पर जैसे ही वह अगली चाल चलता था, शानतुंग निवासी ल्यू उसे खारिज कर देते थे। आखिर वह निराश होकर लौटा। ल्यू के घर से काफी दूर जाने के बाद उसने थैले में पड़ी शराब की बोतलें और केक निकालकर बाहर फेंक दिए और बुदबुदाया, “अच्छा है, आवारा कुत्ते खा जाएं।”

शीघ्र ही रात की हवा शराब की भीनी मीठी खुशबू से भर गई।

5

जब ब्यूरो बुलेटिन में दंड प्रकाशित किए गए, ऐसा लगा मानो रेल की पटरियां भूकंप के झटके से उखड़ गईं। कुछ लोग गहरी नींद से जागे और एक व्यक्ति पर तो मानो बिजली ही गिर पड़ी। पाए फान उसी दिन दिल की बीमारी से बीमार पड़ गए। जब ल्यू ने सुना तो सोचा, “क्या शर्मिंदगी के कारण वह बीमार पड़ा या फिर उसे ऐसा लगा कि उसे गलत समझा गया। पिछले कुछ वर्षों में ऐसी कितनी घटनाएं हमारे समाज में हो चुकी हैं? लोगों में बीमार पड़ने की प्रकृति उभरी थी, इससे वे यह सिद्ध करना चाहते थे कि उन्होंने बहुत काम किया है।”

ल्यू ने उस रात पाए फान के यहां जाने को सोचा। वह स्वयं उनके स्वास्थ्य के बारे में जानना चाहते थे। अधिकांश व्यक्ति इस तरह की मुलाकात से डरते हैं, पर ल्यू ऐसे नहीं थे।

चांदनी रात में तारे जगमगा रहे थे। सड़क पर लोगों की आवाजाही कम हो गई थी। युवक-युवतियों के कुछ जोड़े पास के बगीचे में जा रहे थे।

ल्यू एक नवनिर्मित अपार्टमेंट में पहुंचे। दरवाजे पर दस्तक दिए बिना वह सीधे दूसरी मंजिल के एक कमरे में घुसे। कमरे में पाए सिर



के नीचे तकिए डाले बिस्तर पर लेटे थे। बिस्तर की बगल की मेज पर दवाइयों की बोतलें पड़ी थीं, उनमें से कुछ जापान और जर्मनी से आयातित दवाइयां भी थीं। वह सचमुच बीमार थे। पाए फान ने जब ल्यू को देखा तो उन्होंने दीवार की तरफ पलटने की कोशिश की और आंखें बंद कर लीं। तभी भीतरी कमरे का दरवाजा खुला। कमरे के अंदर से सुंदर युवती लिंगलिंग ने झांककर देखा। ल्यू को देखने के बाद उसने झटके से दरवाजा बंद कर दिया। ल्यू वहां खड़े-खड़े सोचते रहे, “ऐसा अहंकार!” वह कुर्सी खींचकर बैठ गए। मेज पर एक सुंदर औरत की तस्वीर रखी थी। पाए की पत्नी की तस्वीर थी, दो वर्ष पहले उनका देहांत हो गया था। जब वह छोटी थीं, तभी से अपनी सुंदरता के लिए प्रसिद्ध थीं। पाए फान का वास्तविक नाम पाए अड़चू था। इस लड़की के प्रेम में अपने नाम को थोड़ा रोमांटिक बनाने के लिए उन्होंने नया नाम रख लिया था, हालांकि ल्यू ताशान ने उस समय नाम बदलने का विरोध किया था। पाए फान ने इस लड़की को प्रेम-पत्र लिखने के लिए विश्वविद्यालय के एक लड़के की मदद ली थी। पत्र “मेरी प्रिय...” संबोधन से आरंभ किया गया था, ताकि लड़की यह सोचे कि पाए फान योरप में पढ़ चुके होंगे। परंतु उसने “मेरी प्रिय...” संबोधन को पसंद नहीं किया था। इन अशुभ शब्दों के कारण पाए फान को परखने में उसने तीन महीने का अधिक समय लगाया। अब यह सौंदर्य दुनिया में नहीं है। तस्वीर की वह औरत उदास नजरों से अपने घर को देखती हुई मानो पाए फान और अपनी बेटी लिंगलिंग से पूछ रही थी, “मेरे बिना तुम कैसे रह रहे हो?”

ल्यू काफी देर तक बैठे रहे, पाए ने करवट नहीं बदली। ल्यू ने अंदर के कमरे के दरवाजे की तरफ देखा, खांसा और आवाज दी, “लिंगलिंग तुम्हारे यहां एक मेहमान आया है क्या तुम लोग चाय नहीं पिलाओगी?”

अंदर के कमरे से फिर भी कोई आहट न मिली। ल्यू ने अपनी आवाज ऊंची की, “लिंगलिंग, तुम्हारे यहां मेहमान आया है। क्या तुम

चाय नहीं पिलाओगी? क्या तुम्हें भी दिल की बीमारी हो गई है?”

अंदर के कमरे में शांति छाई रही। अचानक पाए पलटे और बोले, “लिंगलिंग, यह बड़ों के बीच की बात है। तुम इसमें न पड़ो और चाय ले आओ!” उनकी आवाज में रूखापन था। उन्होंने लिंगलिंग को बुलाकर फिर से पीठ घुमा ली और आंखें बंद कर लीं।

मुंह फुलायी हुई लिंगलिंग आई। उसने चाय की प्याली ल्यू को दी। ल्यू ने उसकी आंखों में आंसू देखा।

उसने अपने चेहरे के आंसू पोछते हुए कहा, “चाचा ल्यू, आपने मेरे पिता के साथ ऐसा व्यवहार क्यों किया... यदि उन्हें कुछ हो गया तो मैं क्या करूंगी?”

ल्यू ने उसके सिर को सहलाते हुए भरे दिल से कहा, “नहीं, उन्हें कुछ नहीं होगा।” फिर कहा, “यदि कुछ हो गया तो मैं हूं न!”

लिंगलिंग मुस्कराई। ल्यू ने बिस्तरे के पास कुर्सी खींची और पाए से कहा, “धिक्कार है! कम से कम मुझसे बोलो तो।”

पाए ने कमर सीधी की, पर चेहरा नहीं घुमाया। ल्यू ने आगे कहा, “मैं जानता हूं, तुम परेशान हो। पर क्या तुम्हें लगता है कि मैं खुश हूं? लिंगलिंग की रोनी सूरत देखकर मेरे दिल पर क्या गुजरी? पर हम क्या कर सकते हैं? हम अपने आदर्श और सिद्धांत छोड़ दें क्या? पार्टी छोड़ दें? तुम मुझसे अधिक जानते हो... आओ... थोड़ी शराब पिएं।”

पाए ने चेहरा घुमाया और



ल्यू से पूछा, “किसके लिए शराब पियोगे, दोस्ती की खातिर? दो वर्ष हिरासत में रहने के नाम पर? या मुझे दंडित करने के नाम पर?”

ल्यू ने जवाब नहीं दिया। थोड़ी देर के बाद वह बोले, “धिककार है! तुम इतने जिद्दी क्यों हो?” उन्होंने कपबोर्ड खोला और एक पोर्सलिन जार और अड़क्योथओ (बाजरे से बनाई गई विशेष शराब) की बोतल निकाली। उन्होंने पोर्सलिन जार को आधा भरा और जाम उठाकर बोले, “हमारी दोस्ती की खातिर।”

ल्यू ने लंबी घूंट ली और पाए की तरफ जार बढ़ाया। पाए ने जार नहीं पकड़ा। ल्यू ने फिर से जाम उठाया, “वाष्प इंजन की समाप्ति और स्वचालित स्विचिंग के नाम पर!” उन्होंने फिर से एक घूंट ली और पाए की तरफ जार बढ़ाया। पाए ने फिर भी ध्यान नहीं दिया। ल्यू ने तीसरी बार जाम उठाया और बोले, “हम दोनों के खातिर, कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्यों की खातिर और तुम्हारी पार्टी सदस्यता के लिए मेरी सिफारिश की खातिर!” उन्होंने तीसरी बार घूंट भरी और पाए की तरफ जाम बढ़ाया। इस बार पाए बिस्तर से उठ बैठे। उनका चेहरा लाल हो गया। उन्होंने कांपते हाथों से जार पकड़ा और धीरे-धीरे घूंट भरी।

ल्यू खड़े हुए और जाने के लिए मुड़े। वह बाहर निकल गए। उन्होंने पीछे किसी के आने की आवाज नहीं सुनी। काफी दूर जाने के बाद मुड़कर देखा, दरवाजे के बाहर लिंगलिंग के सहारे पाए खड़े थे और उन्हीं की तरफ देख रहे थे। ल्यू फिर भावुक हो उठे, “आः” वह सड़ी लकड़ी का कुंदा नहीं है।”

रात गहरी हुई। ल्यू को लौटते समय लगा कि उनके दिमाग में कुछ घूम रहा है। उनकी बगल से एक प्रेमी युगल निकला। युवती का सिर युवक के कंधे पर टिका था और दोनों खामोश चले जा रहे थे। ल्यू ने उन्हें फिर देखने की कोशिश नहीं की। उन्हें अपनी पिछली जिंदगी याद आ गई! उनकी आंखों के सामने च्याओतुंग के खेत, लाल बेर और सहयोद्धाओं की मृत्यु का दृश्य उभर आए। उन्होंने पुराने



डिवीजनल कमांडर की कड़क आवाज सुनी, “क्या तुम कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य हो?”

उन्होंने महसूस किया कि उन्हें पाए को, कम्युनिस्ट पार्टी के सभी सदस्यों को, इस प्रश्न का ईमानदारी से उत्तर देना चाहिए।□